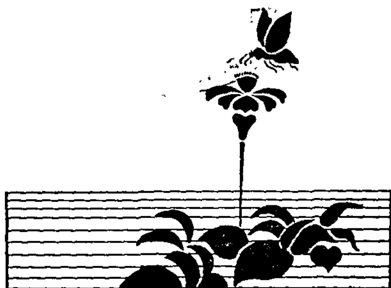
निजराणो

सत्यप्रकास जोसी री कवितावां

राजस्थानी सिरजणधारा–अेक





सत्यप्रकास जोसी री कवितावां
सम्पादकः चेतन स्वामी

राजस्थानी भासा साहित्य अेंव संस्क्रति अकादमी, बीकानेर

मोल : साठ रिपिया

राजस्थानी भा. सा. स. अकादमी सू कानी छपी/पैलो संस्करण-1990/सगळा इधकार : अकादमी रा/
आवरण : अमित भारती/मुद्रक : सांखला प्रिण्टर्स, सुगन निवास, चन्दन सागर, बीकानेर

NIZARANNO (Poetry) by Satya Prakash Joshi Edited by Chetan Swami
Rs. 60.00

प्रकासक कांनी सूं

राजस्थानी भासा, साहित्य अेंव संस्कृति अकादमी, बीकानेर रो थरपणा रै पछै सू ई पोथी प्रकासण रै मतै उदासीन रवैयो रैयो। अकादमी री नूंवी कार्यकारिणी अर सामान्य सभा इण रवैयै माथै गभीरता सू विचार कियो अर चालू रोकड वरस में की पोथ्यां छापण रो निरणै लियो है। इणी निरणै रै तहत राजस्थानी रा चावा-ठावा कवि सत्यप्रकास जोसी री टाळवी कवितावां री आ पोथी 'निजराणो' पाठकां नै निजर कर रैया हां।

राजस्थानी समकालीण कविता रै छेतर मे श्रीजोसी अेक नूवी भाव भूमि त्यार कीवी है जिकी कविता री असल पिछाण रै रूप आपारै सांम्है है। जोसी रो भासाई सिल्प तो घणो रळकवां है। राजस्थानी अकादमी श्रीजोसी री टाळवी कवितावां रो ओ संग्रह 'राजस्थानी सिरजण धारा' प्रकासणमाळा रै पैलड़ै पुसब रै रूप प्रकासित कर रैई है। सिरजण धारा योजना में केई दूजी पोथ्यां ई वैगी ई पाठकां रै हाथां मे होवैला।

पतियारो राखा ओ 'निजराणो' पाठका नै दाय आवैला

वेद व्यास

छारडी, 90

अध्यक्ष

राजस्थानी भासा, साहित्य अेंव

संस्कृति अकादमी बीकानेर, (राज.)

विगत

संपादकीय दीठ

फगत म्हैं ई क्यूं, अेक मोटो राजस्थानी पाठक वर्ग है जिको सत्यप्रकास जोसी री कवितावां बांच बांच नै फेर बांचै अर जिती वार बाचै निरवाळी अणभव हेमाणी अंवेरै। घणा निजू क्षणा में जोसीजी री कवितावां रा नैना टुकड़ा आपरी खिमता रा नगारा घमकावै। ऊमर रै परवाण न्यारा अरथ संदर्भां रै सागै ऊभी होवै—अे कवितावां। इणनै अेक कवि री घणी मोटी अर गीरबैजोग हांसल कैवा तो कठै ई असंगत बात नी होवै।

जोसीजी कनै कविता रो जिको 'क्लासिक फॉर्म' है वो नीं 'आज' सूं जुदा है, नी 'काल' सूं अळगो। कविता में जिकी खास चीज होया करै—मायलो लगाव, उणरी अपड़-पकड़ जोसीजी कनै खूब-खूब। लयकारी रै नतै, आनुप्रासिक बधेज तो वांरी हरेक कविता री पंगत-पंगत मे सैचरूड़ होवै। लोक मानस रा इण कवि कनै आपरी सबदावळी है–जिकी जमीन रा लोगां सूं जमीन री वाणी में बोलै-बतळावै।

'राधा' सूं 'पुजापो' तांई री काव्य जात्रा में भलांई सिल्पगत बदळाव आपांनै निगै आवै पण वांरै रचनात्मक मूल्या रै 'इन्प्रेशन्स' में कठै ई फोर-बदळ नी दीखै। हा, भौतिकता रै खोड (जंगळ) रो डरावणोपण जोसी रै कवि नै ऊमर रै इण पड़ाव पूगतां, ज्यादा 'प्रोडेक्टिव' बणा देवै। भौतिकता रै प्रसार रा विरोधी नीं है जोसी-पण, वै उण विरती रा घोर विरोधी है–जिकी मिनख री देह सूं काळजो काढ लेवै। वांनै लागै कै विग्यांन री वेगवान विरती लोगां रा काळजा काढ रैई है अर वां री कवितावा रा हथियार लोगां नै

काळजा विहूण होवण सू रोक रैया है। वांरी इण समस्टि समझ नै ऊपर-ऊपर सू जोया लागै कै वै कोई रूपवादी सौंदर्य बोध रा कवि है पण वांरी रचना मे कठै ई व्यक्तिगत 'आणंद अर घाप' जैड़ी प्रवृति नी है। वै समाज सागै प्रकृति रै जड़-चेतन रो गनो (रिस्तो) दर ई नी भूल पावै। ओ ई वांरो सौंदर्य बोध है।

काव्यकला मे मानवीय मूल्या रा हिमायती जोसी, राग-द्वैस हरख-सोग नै काम-क्रोध जैडा मनोविकारां नै मिनखरी संग्या सू जोड'र देखै अर वारै बीचला अन्तविरोधां री पडताल ई 'अहंवादी' होयनै नी करै। पाच दसका रै काव्य जीवण मे जोसीजी रै कवि नै 'व्यक्तिवाद' सू कोई खतरो नी होयो, वांरी आस्या अर सौंदर्यबोध दीठ हरमेस नैतिक-सासता जीवण मूल्यां रै पख मे रैई। सत्यप्रकास जोसी अेक लाबै अर्से तांई मच रा चावा कवि ई रैया है इण वास्तै 'मंच संस्कृति' रा खतरा सू वै ई गेईज (ग्रसित) सकै हा पण अैड़ो कुजोग नी मधियो अर वै आपरै कवि रै ऊजळै अर अबोट मिनख री रिछ्या करली। कैयो जावै कै कला रै मानवीयकरण सू मिनखा री भावनावा नै तिरपती मिलै। अेक कला-जीवी सारू इण सू मोटो निजराणो कांई होवै, कै वो आपरै काम सू भावनावां रो विकास करै, जिको हर भांत-समाज रै विकास सूं जुड्योडो होवै।

लगै टगै आजादी रै पछै सूं सरू होई जोसीजी री काव्य जात्रा। हिन्दी-राजस्थानी मे छुट-पुट गीतां रै सागै ई वां रो राजस्थानी जगत मांय धमाकैदार परवेस होयो। धमाकैदार इण नतै कै आजादी रा गीत गावणवाळा कवियां रै प्रयोजण धरमी काव्य माय कविता आपरी पिछाणगत अनुरंजनी चेरै नै कठै ई लुकायां बैठी ही—'न कान्तमपि-निर्भूषणं विभाती वनिता मुखम्' (वाल्ही घण रो मुंडो ई बिना सिणगार तो अलूणो)। मंच रै खंदोळयां चढनै कविता उण वगत फगत भाव नै भूल विचार नै झाला देय रैई ही। या पछै की लोग पारंपरिक वीर रस कै सिणगार रा ई रसिया बण रैया हा। राजस्थानी कविता जिण भासा अर मुहावरै रै ढब ढळ रैई ही उण नै 'समकालीन समझ' अर 'तरास' रै गेलै लावण में जोसीजी रो सिरै हाथ रैयो। मंच जोसीजी रो ई की दिनां तांई माध्यम रैयो पण वांरै खातर कविता फगत मन बिलमाऊ रिगल नी रैई, वै इण नै महताऊ क्रियेशन मान्यो अर मंच रो इस्तेमाल ई उण दीठ सूं करयो।

स्वर रो प्रभाव घणो चिमतकारी नै वसीकरण जैड़ो होवै। विचारक कॉडवेल रो ओ मानणो वाजब ई है कै 'कविता रो सनमन उपेजो करण वाळी मैणत सू ई होवै।' कविता मिनख नै संस्कारित करै अर उणरो

वैचारिक नै भौतिक विकास ई करै । मिनख री मैणत सूं रिस्तो नै मैणत रो लय सूं संगोठो अर लय कविता री सिरै जरूत। जोसीजी कविता रै इण आदू गणित नै बिसरायो नीं। लोक री सांस्कृतिक चेतना नै जगावण सारू जिण ढब अर सिल्प री जरूत होवै वीं जरूत नै जोसीजी खास-खास मैसूस कीवी अर लोकगीतां रै सलूणै सिल्प नै आपरी कविता रो मुहावरो बणायो। लोक साहित्य री अद्भुत सम्प्रेसणीय सगति नै ओळखी अर उणरा वै तत्व जिका समाज नै समाज रा आखा कारज बौपारां सूं सैंमुडै करै—जाण लैवणा किणी साधना सूं कम नीं है। लोकगीतां रै सिल्प नै अंगेज लेवणो तो फगत चलराई रो काम होय सकै पण वा री 'पूग' (एप्रोच) री बुनियाद लग पूगणो सहज नै सहळो काम नी है। लोकमानस रै इण चितेरै नै लोकगीतां रो पॉवरफुल कन्टेन्ट हर रचना में अखरावणो देवतो रैयो।

'राधा' भारतीय साहित्य री बेजोड काव्य क्रिति है। यूं तो राधा क्रिसण री हेजाळू वायेली है पण जद वा आपरै 'कमगर' हाथा सूं भांत-भांत रा धरू काम करै तो मैणत री पूतळी ई लागै अर मैणत नै ई वा पूजा जाणै। श्रम रै पछै रो सुख, उणरै रूं-रूं सूं ढुळै। सुख-सौरप सारू राधा अेकली धणियाणी बणन रो मतो नी राखै। क्रिसण जे सुख रो लेरको है तो, वा चावै इण लेरकै सूं आखो जगत आपरा प्राण सरसावै। राधा आखा जगत नै आपरै आवगै सांस्कृतिक सरूप सागै सरस-सलूणो देखणी चावै। क्रिसण सूं जगत नै विध्वंस सूं बचावण सारू हाथ जोड़-जोड़ नै जुध जैडी आमुरी विरतियां परिया राखण री टैर ई इण काव्य रो असली मकसद है। क्रिसण सिरजणकारी सगतियां है नै राधा जीवण रा सांस्कृतिक मोल। जोसीजी रै इण काव्य सूं जिकी अमर 'पारस्थितिकी' चेतावणियां प्रगासीजी है, वै आज पल पल किती जरूरी बणती जा रैई है इण नै आपा सहज ई समझ सकां।

'दीवा कांपै क्यूं' रा सगळा ई गीत सत्यप्रकास जोसी री सरूआती पिछाण रा लोवडा थंभ है। कविता री सासताई रा पक्का प्रमाण अै गीत मिनख री उण अबोट घणियाप रा गीत है जिकी निरजीव बीजा में प्राणां रो संचार करै नै जिकी इण रूपाळै संसार री धड़कना नै आपरै मांय धडकावै। गीतां रै जस रा बखाण तो चावै करियां ई जावो क्यूं कै गीत ई तो होवै जिको रैणादे रै खोळै सोनल भांण जलमावै अर अंधारै री ओवरियां ग्यांन री पीलजोत जगावै। सबद, विचार, भावनावां री भेळप सूं कविता रो जलम होवै। हिड़दै अर मगज रो ताळमेल जठै कठै ई टूटै, कविता रो अेकांगी होय जावण

रो खतरो ई बध जावै। सबद छिणी ई पोरवा री आंख सूं मूरत नैं घड़ै। भीत जिको अणघड पड्यो है, भीत जिको कैयो नी गयो है, सबद ई तो उण मून नैं भागै, अणघड़ नैं तरासै। अमूरत नै परगासण वाळो सबद जद हिड़दै अर मगज रा देळी-दरूजा डाक नैं अवतरै तो गीत रै उणियारै आपांरै सांम्है होवै। गीत जिण मे मानखो जीवै जलमैं, गीत जिण सू समाज जागै। इण खातर जोसीजी कैवै—'आवो रे कविया म्हारै साथ रे, जुग नैं नूवै गीतां सू घेरल्या।'

'बोल भारमली' है तो अेक इतियास कथा पण इणनैं खाली इतियास री घटणावां रो बखाण ई नी कैय सकां। नी ई इण नैं सन-सम्वत रै मतैं सतरवी सदी रै राजस्थान इतियास री अेक घटणा ई कैय सका। भारमली जोसी रै कवि री 'नारी' है अर उण सूं मिळणवाळा पुरुस ई जोसी रा पुरुस पात्र है। बोल भारमली सिस्टी री धड़त करणवाळी नारी रा सवाला रो काव्य है। वै सवाल जिका भूतकाळ सूं अबार तांई पड़तर री उडीक मे उभा है। नारी अर उणरी मरजाद, पुरुस अर उणरा करतब, इण रै ओळै-दोळै ई इण काव्य री कथा पूरी नी होय जावै। भारमली रा सगळा बेवहार रै पछै जिकी भारमली पाठक रै मन मे जलमैं वा जोसी री 'राधा' है, 'भारमली' है, 'जयसी' है, नैं कवि री सर्वांग मानवीय स्त्री पात्र है। जोसी री फगत इण अेक पंगत मे नारी रो मानवीकरण होय जावै कै—'थे दूजी कुदरत हो विधाता री, पैली कुदरत री खामियां पूरी करणवाळी।'

'गांगेय' महाभारत रै पात्र भीस्म माथै काव्य है, पण 'राधा' अर 'बोल भारमली' रै ज्यूई नर-नारी सम्बन्धा री पडताल ई इण काव्य रो अभीस्ट है। कवि साहित्यकार समाज विग्यानी ई होया करै है। जन विरोधी सस्क्रति, सडी व्यवस्था रो प्रतिकार ई उणरो लक्ष्य होवै। समाज में नर अर नारी दोय सगतिया रै ज्यूं होवै पण नारी रै सागै लगोतार माड़ो वरताव कियो जावणो अेक मोटी सगति री अवमानना है—जिणरो परिणाम महाभारत रै रूप मे सांम्है आवै। महाभारत में भारतीय समाज रै विकास अर बदळाव रा खोज ई लाधै। कविता री मनोभूमि ई समाज री मांयली अर बारली सत्तावां सूं न्यारी नी होवै-उण मे कथ्या जावणवाळा आखा भाव समाज री स्थितिया नैं ई पड़बिंब करै। नर-नारी रै सनमन री कथा महाभारत, विग्यांन रै इण जुग पूगतां ई कितरी प्रासंगिक है, ओ बतावणो ई मूळ धेय रैयो है जोसीजी रो-न कै महाभारत रा अवांतर प्रसंगा नैं फगत रास देवणा। मरती वेळा गांगेय माल सत्ता रो सिवरण करै, ओ सिवरण ई वां रो नारी री घटती मरजाद रो अबोट पिछतावो होवै।

तकनीकी जुग अर मिनखां रै सनमन रो काव्य है 'आगत-अणागत'—यांत्रिकता रै खोड़ में मिनख जैडो संवेदणसीळ प्राणी गमतो जाय रैयो है। मिनख री आंतरिक पिछाण, उणरो सौंदर्य बोध, आपोपरी रो लगाव, दीठ-मीठ रो फरक, स्सो कीं बदळ जावैला तो कांई मिनख फगत अडवै ज्यूं होयनै रैय जावैला? इणरै चलतै समाजू संस्थावा टूटती ई जावैला तो उणरी छेकडली परिणति कांई होवैला? अैडी ई चिंतांवा इण काव्य में दीठीगत होवै। मिनख इण भौतिक दौड़ (जिकी जरूरी होवै पण उणरो अणूतो अटावरोपण मिनख नै खंडित ई करै) मे भाजतो उथपग्यो होवै अर अमूंझ'र विसाई खावण सारू कंवै। 'छिण अेक धरती नै थामो–थामो म्हनै उतरणो है।'

'आहूतिया' आपरी तरै रो अेक निरवाळो काव्य है। राजस्थानी में प्रकृति, प्रगति, भगति, नीति निरा ई काव्य लिखीज्या पण 'सम्बोधनात्मक' सैली में लिख्योड़ी अे कवितावां किणी ई भासा मे अेक अद्‌भुत प्रयोग है। कवि समतामई संसार सारू प्रकृति अर समाज सूं आपसी गनो राखणवाळी हरेक चीज, हरेक भावना रो आव्हांन करै। कवि री चेतना सूं ओ ई प्रगासीजै कै सौंदर्य मिनख री चेतना सूं अळगो होय जावैला तो उणरो अरथ काई रैय जावैला? मिनख सूं जुड़्‌या ई भौतिक सौंदर्य–मोला मे बदळै। मिनख रा कारज अर उणरै सौदर्य बोध मे गैरो रिस्तो होवै। इण खातर ई तो कवि चराचर नै आहूत करै अर कंवै-आवो, 'इण ब्रह्मांड मे सिरजां देव स्रिमटी रा जुग!'

प्रेम, भगति, आराधण री कवितावां रो ई दूजो काव्य है 'पुजापो'। प्रेम में निर्वेयक्ति री भावना, भगति में लोकमंगळ री भावना होवै तो कविता 'मतर' री ओपमा पावै। इण आराधण में रिसी रै संजोड़ै ई होवै कवि। वैदिक सूत्रां रो रहस ई महज समझ में आवै। वाणी रै इण निराकार साच नै कविता, मतर, सम्मोहन चावै ज्यूं अभिहित करो, उणरो मूळ लक्ष्य तो अेक ई होवै—लोक कल्याण री भावना। जोसी रो सनेसो इण बात सारू कै विणास री परविरतियां नै फगत प्रेम सूं ई दाबी जा सकै—अठै ओ सनेसो घणो समीचीन प्रतीत होवै। संसार अबार जिण स्थितियां सूं रूबरू होय रैयो है वै कितरी घातक है—इणरी कल्पना कवि जैडो जुगद्रस्टा नीं करैला तो कुण करैला।

सत्यप्रकास जोसी रो मूल्यांकन आपां राजस्थानी रै ऊजळै भविस रै रूप मे कर सका हां। राजस्थानी कविता रै इण विराट कवि रै स्वास्थ्य री मंगळकामना करां।

□ चेतन स्वामी

काईं इण विग्यांन रा जमाना में मिनख रो अंत होयग्यो ? काईं विग्यांन मिनख री देह सूं उणरो काळजो काढ लियो अर उणरी भावना रो विणास कर दियो; जिण सूं कै आज मिनख रैं वास्तैं कविता री कीं दरकार कोनी। काईं मिनख रैं जीवण सूं आज दुख, दरद, हरख, नेह, उछाव, आणंद, क्लेस, संताप अर मोह-परीत इत्याद भावनावां लोप होयगी; जिको आज कविता रो जमानो कोनी। हर जमाना रो मिनख आपरैं सारू जमाना रैं मारफत ई कविता निरमाण किया करैं।

राधा

1960

- पैलापैल
- बदनामी
- ब्याव
- विदा
- जुध

पैलापैल

पूंन पालकी में बैठ्या
मुरली रा झीणा सुर
म्हारा नांव नै
कूंट-कूंट में गावै
कण-कण रा कानां में गुंजावै,
जमना री लैरां म्हारा नाव नै कळकळावै,
ठेट समदर री छोळांलग पुगावै,
रूंखां रै पानडां रा होठ
म्हारा नांव नै गुणगुणावै
कोयल नै सुणावै

पण पैलापैल
सुगणी जसोदा रा जाया !
थूं म्हारो नांव पूछियो;
लजवंती लाज
म्हनैं दुलेवडी कर न्हाखी
दो आखरां रो भोळो-ढाळो नाव
म्हारै मूखतै कंठां रैं
पोयण में भंवरां ज्यूं अटकग्यो,
म्हारै होठां री लिछमण-रेखा में
बैण जानकी दाझण लागी

थूं म्हनै घणी-घणी बातां पूछी
पण सुगणी जसोदा रा जाया !
म्हारै सुरंगै गालां रै कसूमल म्हैला सूं
लजवंती राणी
नी उतरी भो नी उतरी

आज अणचितारयां
अणवुलाई, अणचीती सी
अलेखूं वार
दौड़-दौड़ आऊं थारै दुवार
तो ई नी अछैही आस पूरै
नीं सवाई साध पूरै
रे म्हारा कांन्ह कांमणगारा !

पण पैलापैल
अचपळा कांन्ह कंवर !
थू म्हारो अवोट पुणचो पकड़
सुरंगी जमनां रै कांठै
उण कदंब रूंख रै पसवाड़ै
म्हारै नैणां में टुग-टुग जोवण लागो,
थारै कोडीलै हाथ रो
निवायो परस
म्हारै रूं-रूं में
झणकारां रा झाला मारण लागो
रगत नाडियां में
जाणै पाळो जमग्यो;
आखै पंथ, आखै मारग,
पगां में भाखर रो भार लियां
धणी दोरी चाली

आज थारै-म्हारै परसेवा में
कोई भेद कोनी,
माठ कोनी,
थनै म्हारी पलकां सूं
वाव ढुळाऊं
तो म्हारो पसीनो तो आप ई सूक जावै

पण पैलापैल
हेम रै उनमान
धारा ठाडा दरस सूं

म्हारा पसीना में जांणै आदण लाग्यो
थूं पीतांवर सूं
म्हनै वाव करतो ई गियो
अर म्हारो पसीनो
नैणां-नैणां, पलकां-पलकां
अर रुं-रुं सूं
उफणतो ई गियो

आज जमना रै सगळै कांकड
डाडी रै माथै
मुळकती मिमजरियां
जांणै म्हारी मांग रो चितराम

पण पैलापैल
म्हारी मांग सजावण नै
अमर सुहाग रै खातर
थूं मिमजरियां रा मोती लायो,
तद म्है छळगारी लाज रै फरमांण,
माथो ऊंचो कर लीनो;
डांडी-डांडी मिमजरियां रळगी,
कांकड़-कांकड़ मोती रळग्या

आज अंबर रा लिलाड माथै
चळापळ तारां री
अणगिण टीकियां
पळपळावै, चमचमावै, मुळकै

पण पैलापैल
जद थूं म्हारै आंटीलै भंवारा बीच
रतनाळै हींगळू री
टीकी देवण लाग्यो
तो म्हैं छळगारी लाज रै फरमांण
माथो नीचो कर लीनो
म्हारी मुरंगी मेंहदी रै उणियार

बदनामी

छानै क्यू मिळू
म्हारा कान्ह छांनै क्यू मिळूं ?

थारी मुरली
म्हारा ई तो नांव नै
धरती आभै में सरसावै;
वरस जुगां री छेली माठ लग पुगावै;
कुण नी मांनै ?
कुण नी जांणै ?
तो छानै क्यूं मिळू
म्हारा कान्ह छांनै क्यूं मिळूं ?

नगरी-नगरी, हाट-हाट, गळी-गळी
लोग म्हनै जांणै,
थारी-म्हारी सूरत पिछांणै
अेक जीव रा अे दो इदका रूप
कुण राधा, कुण गोपाळ !

ओ जमना रो नीर अथाग
थारा नै म्हारा भेळा भाग
रूंखा रा सगळा पांन थनै जांणै,
म्हनै हर फूल हर कळी पिछांणै,
तो छांनै क्यूं मिळूं
म्हारा कान्ह छांनै क्यूं मिळू ?

यो आभो धरती नै चूमै
ये जमनां री लैरां सागर सू लूमै

जो फूल बादळ रा बागां में
चांद रा मोती मांग सजावै.
जो फूल धोरां रै मगरै
आपरा आंसूड़ा भरत नै
पलकां मांय पु घुलावै,
जो भगत भूला रै बागां में
आपरी डाळ रा बोल गुणगुणावै
जो [illegible] धारै-धारै [illegible] अनेक,
म्हारी-म्हारी डाळ री [illegible] अनेक,
म्हारी डाळ म्हनै अमर करै
म्हारी डाळ म्हनै फूल करै

वां फूलां नै नमू निजू
म्हारा काळजा फूलां नै नमू निजू ?

ब्याव

नी कान्ह ! नी
थारो-म्हारो ब्याव कोनी हो सकै !

म्है विरज री अेक गूजरी
थारी जांन री किण विध खातरी कर सूं !
दायजो कठा सू ला सू !
जणा-जणा रो मन किण विध राख सूं !
सासरा नै कियां केवट सू !
नो कांन्ह नी
थारो-म्हारो ब्याव कोनी हो सकै !

दूर देस रा राजम्हैलां में
कोई राजकंवरी
सपनां रो संसार सजाती
थारी माग उडीकती होसी
थारा चितराम कोर-कोर
दूतियां नै दिखाती होसी;
कामण करती होसी

थारा राज सूं
मोटा सिरदारां री जांन
आगलै गढां पूगसी,
साम्हेळो जुड़सी
डेरा लागसी
नगर री ऊंची हवेलियां रै
झरोखां सूं
कांमणियां फूल गेरसी

नगारां री घोर
अर तोपां री दणाकां रै बीच
थूं किणी दन रै
गारण बापणी
मा धरती रै गाढ़ै हिय में पळी
कोई लाडली
दूर-दूर चौहद री माटी सूं
लिया दिनी.
अर दूर-दूर
आपरा घर-दुवार में
माय-मान में,
गळी-गुवाड़ में
चिणपट, बाग में
रूंखां में, बेलां में, फूलां में
भूखां में, पोखण में, अवरां में
छळछळाता आंसू
देखती-देखती पराई हो जाणी।

ओ बावळ! नां
थारी-म्हारी ब्याव कांनी हां भरी!
कई देसां रै टणका राजवियां री
भराभर भरी सभा में
लाज में सिमटयोड़ी,
हिरणी-सी डरयोड़ी,
कोई बड़भागण
थारै हाथां हरण करया री
कामना करती होसी
आंधी रै वेग
वतूळिया रै भंवर में
यूं उणनै उठा लागी
परणवा रा कोडीला दूजा पतगाड़
आपरी मांग सूगता देख,
रीस अर अपमान री साळो गदबदता,

थारै लारै
अजेज वार चढसी,
पण थू आपरै आपा रै पांण
पूनगत रथ माथै हाकां-धाकां
उण कंवारी नै
थारै रंग म्हैला ला विठासी

नी कान्ह ! नी
थारो म्हारो ब्याव कोनी हो सकै !

बीनणी तो जीतणी पड़ै
गऊ-सी किणी किन्या नै
जीतवा सारू
केई राजा भेळा होया होसी
सै आप आपरै
भुजदंडां रो वळ आंकसी
कोई धनख तोड़णो पड़सी,
कै कोई निसाण साधणो पड़सी,
कै वळै कोई अणहोणी करणी होसी

थारी भुजावां रो वळ
कंवारी किन्या रै
घरवाळा रो प्रण पूरो करसी;
अणजाण किन्या
अणजांण सूरवीर र गळा में
वरमाळा पूरसी;
पुरोहित मंत्र उचारसी,
कड़ूंबो मंगळ गावसी,
मावड़-वावल हरख रा गीत गवासी,
खुसियां रा ढोल बजासी;
छेला मौरत तांई
हारचोड़ा मनहीणा राजा
घमसांण मचावसी
वानै भरपूर हरायां

थनै म्हारो अंस वणायो,
थारा दुख में दुख जांण्यो,
थारा सुख नै सुख मान्यो;
थारी रीस आदरी,
थारै मनावण रूसणा करया;
घणी रींझी, घणी खीजी;
थारै जीवण री
थारै वधण री
कांमना करी।

थनै रेकारो देती-देती
अबै 'नाथ' कियां पुकारूं ?
नी कांन्ह ! नी
थारो-म्हारो ब्याव कोनी हो सकै !
ओ तो थारो थारा सू
नै म्हारो म्हारा सू ब्याव हो जासी।

बिदा

आज थूं मथरा जावै
भलां ई जा,
म्हैं कद रोकूं।

थारै मंगळ पंथ रो अपसुगन करूं कोनी,
थारा दुपटा नै खेंच-खेंच फाड़ूं कोनी,
निस्चै जांण,
हाथां रै लूम-लूम थारो चन्नण उतारूं कोनी
सनेसो भेजण री उतावळ करूं कोनी

आज थूं मथरा जावै
अेकर कुंज में चाल,

थारै रा पूत म्हाई हूं,
धरती रा
सावन सिगरी म्हाई हूं,
माणसां रा
छाती-पीरी री हिरावळ बण नै
धार मनड़ो सिणगार रचाऊं,
जनता रै नीर री बेलड़ी उगाय।
थारै गाडी आऊं,
थूं मूरत बणाय नै
म्हूं थूं मूरत बणाऊं,
थांनै म्हैं मूरतधारी बण जाऊं,
पग पग माथै मूरत रचाऊं
थारै गिणो नहीं ई
सूरजी रै पूरब धाम सूं
मुगट रै मोती हार सूं,
आछा रै सिरजिया पोत सूं,
जठै-जठै थारै पग रा निसाण है
उठै-उठै हरसिंगार रा फूल झर सूं,
प्रेमणी ई धूंवा नै धरती बरज सूं
गूंदी गर दबाऊ भर सूं,
म्हारी देह माथै
जठै-जठै थारै हाथां रा निसाण है
उठै-उठै केसर चंदण लगाव सूं
थूं मथुरा गियो
तो थारी प्रीत नै
म्हारी मायण बणा राख सूं।

जुग

मन रा गीत कान्हा रे—
घर-घर सूं भाजी आई गोपियां

जमना रै काठै रमल्यां राग,
नटवर नागर,
अेकर वजादै थारी वांसरी

मन रा मीत कांन्हा रे—
पिचरंग घाघरिया घेर घुमेर,
ओढण ताराळी वोरंग चूनड़ी
वांया मे वाजूबंद री लूंम,
पगल्यां में वाघ्या विछिया वाजणा
आभा मे पूनम केरो चाद,
आकळ उडीकै थारी गोपियां

मन रा मीत कांन्हा रे—
मिमजरियां भरदै वांरी मांग,
हाथां रचादै मेंहदी राचणी,
मुळभादै उळझ्या कंवळा केस
फूलां सजादै वेणी नागणी,
अतस में भरदै गैरो हेत,
नैणां मे भरदै सुरता सांवळी

मन रा मीत कांन्हा रे—
गोयर सूं काळी धेन उछेर,
गोहै उडीकै साथी गवाळिया
मटकी भर माखण लीजै चोर,
मावड़ नै देस्यां मीठा ओळमा
पिणघट—पिणघट गागर दीजै फोड़,
रस में भीजैला कोई गोरड़ी
लुक जास्यां कंवळां केरी आड़,
थारै मनावण करस्यां रूसणा
आवैली सावणियां री तीज
झूला घलादयां वेगो आवजै

मन रा मीत कांन्हा रे—
नवी मुणी रै म्है आ वात,

दोरा तो पाणी धारी कुए में
कुए रै मेंन पड़ै पचास,
सब मुफ्तोरै मैंना मजदूरा
मजूर में उड़ग्यो दीठे गेर,
बाजन री पाल्हा धारा धुन-सा
हाली पूछता री पाणन पान.
पड़ा पाऊरै सारै रेत री
बीजळ-सी भाला रैगी धार.
धारा पगला रा मीठा मीठा
दीपक जड़ लुमै रै कुम्हार,
पाणी पड़ै र जबर सटपड़ै

मन रा मीत बतावो रे—
कुण धारा दौलत कुण रै मैन,
गाना मोवण बड़ धारी भूरजी !
पारण पड़ बगिया रे बरिसाळ,
लोड़्या पौरावर बड़ रै मोहना !
मीत बणावण बड़ निरधान,
मोर बध उगारया मोर पाग रा !
मुरली रै धसकै बड़ बोरंग,
जिरणी री साख्या आगी बड़ पगी !

मन रा मीत बतावो रे—
जग में जे मंदणी समगाण, तो
भाई पर भाई करगी वार
आपस में लड़ती मरती, मानती
पड़ता पोंदैना काळा ओंड़,
अमर गुलगण मारी गोपियां
नागणिया बिरगी बीन बजार,
कुण तो उगती वैनां नै टांकती
पिरथी पूरना मं होती हीण,
टाबर कहाती बिना बाप रा
कुण करती धीवड़ियां रो ब्याव,
कुण तो कड़ूंवा बारो पाळती !

अणगिण गावड़ियां देशी हाय,
मुड्जा, फौजां नै पाछी मोड़लै

मन रा मीत कांन्हा रे—
जग मे जे मंडग्यो घमसांण, तो
कुण तो वणासी सतखड म्हैल,
कुण तो चिणासी मैडी-माळिया !
कुण तो उगेरै मीठा गीत,
कुण तो वांचैला पोथी पांनड़ा !
कुण करसी गोखड़िया मे जोत,
कुण तो माडैला आगण माडणा !
कुण तो मनावै वार-तिंवार,
कुण तो तुळछा गवरां नै पूजसी !
अणपूज्या सात्यू सिझघा देव,
कुण तो करसी रे मिंदर आरती !
मिटता जीवण री थनै आंण,
मुड्जा, फौजा नै पाछी मोडलै

मन रा मीत कान्हा रे—
जग में जे मंडग्यो घमसांण, तो
कोयल कुरळासी वागां मांय,
नाचता थमसी वन में मोरिया
चीलां मडरासी हरियै खेत,
गीधण भंवैला सगळै देस पर
डाकणियां रमसी रात्यूं रास,
चौसठ जोगणियां खप्पर पूरसी
धरती माता रो लागै स्राप,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोडलै

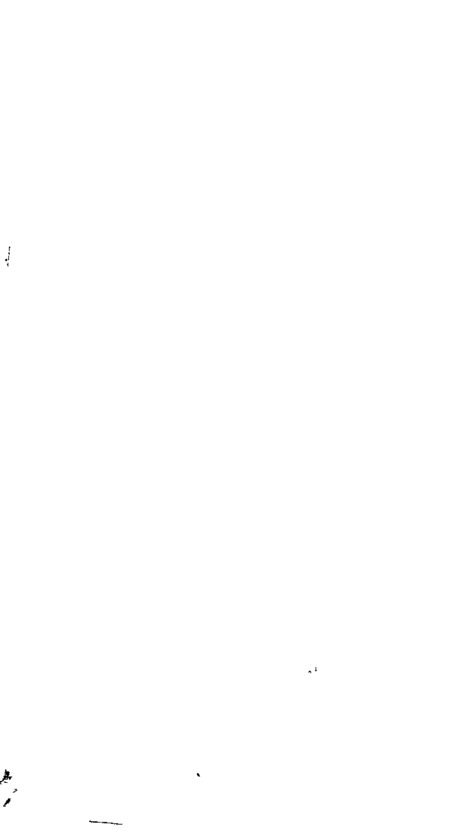
मन रा मीत कांन्हा रे—
जग में जे मडग्यो घमसांण, तो
भातो ले भंवसी रे भतवार,
हाळी जद लड़वा जासी खेत में
हळ री हळवांणी वणसी सैल,

धूणी धुखा नै जोगी धारसी
मुरदां री धोखा री निनाद,
कोई री दाझ झोली रेत मे
कालिमा देखी घणी गाढ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़नै

मन रा मीत बावरा रे—
जद तै झै मरणो मरणाज, गी
जमना मे कोई देखी धार,
माटी रेडाणी मामा मोडिया
कणी रे पावा लिखा धुर,
मुला मदरा बन घणी आदमी
अनाथ रेडाणी मरती मांग,
छनक छिरकी होगी कोडिया
मगु मिठै सपवाड़ा री नाव,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़नै

मन रा मीत बावरा रे—
आजा रे हूरा घोलता लाग,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़नै
गोरा-सावन रा रंगता लोठ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़नै
आजा सोनी नै भरने याद,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़नै
आजा रे निपट फलता बाग,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़नै
आजा रे ओजु रमता राग,
मुड़जा, मुड़जा फौजां नै मोड़नै

□



दीवा कांपै क्यूं

1962

• गीतां री जग • सोवन गाछड़ो • जागण रो गीत
• जीवण रा दीवा

गीतां रो जस

थाळी तो वाजी ऊंचै डागळै
रैणादै जायो सोनल भाण रे
कोई मा टसकै ऊंडी ओवरी

आखै कड़ूबै हरख वधावणा
कुण तो गावै मावड़ री पीड़ रे
सिरजण रे सुख रा कुण दै गीतड़ा

अजमो रंधावै रतन रसोवड़ै
पौळां रे बांधै बांदरवाळ रे
सासूजी सात्या देवै बारणै

हांचळ तो खोळै नणदां लाडली
जेठांणी देवै पाटो ढाळ रे
पड़दा वंधावै गवरू सायबा

जोसीजी वांचै टेवो टीपणो
आई वेमाता मांडण लेख रे
मीठी गीतेरण काढै घूंघटा

मावड़ रै नैणां कविता जीवती
जायोड़ा जुग पुरसा रे जोग रे
कुण तो लिखमी जलमां रा गीतड़ा

वागां तो आई भोळी वायली
मिळवा नै छांनै मन रै मीत रे
गीतां विन किंयां जोवै वाटड़ी

मावेणो घोठी मीठी ओपती
मामा में मेहड़ी मन रो मद रे
बाबा में झूलां बांधे बेवड़ो

गुण रो खजाने कुण रो आगरा
कोई रे गिगिया गुण गीत रे
मन री बातां ने गाय सुणावतां

अड़ती री बिजली गाजे मेहुड़ा
मन मांही नीव बिरखा री झूल रे
कोई आंगण बरसिया मगना

पानां में दुखां अणबोलणा
कोई सुणावो पतर सुजाण रे
गीता बिन कोनी सुरं सावणी

मोरो रिझावें गीत मरवणिया
मेन्दी रचावें मीठा गीत रे
गीता बिन कोनी मदे मावणा

गीता बिन किसा पन्नी घोवड़ी
गावें धनड़ा धनड़ो रा कोड रे
मीठी गवावें कोई गीतड़ा

तीरण री आवां गड्डर सावळी
धनड़ी धुप निहकोल्या रे फूल रे
फागण घोळे रो घोळे गीतड़ा

पेंगे ईं फेरे पगगी साइनी
कुण गगरी पिड़ला रा गिन्नोर रे
संवरी रा बाना गाना गीतड़ा

मीठी कोयलड़ी चाली गावरे
आंगू री गीतां गावे गेळ रे
मरदं बिसराई गीता गीतड़ा

फूलां री सेजां सिवटी घूघटै
संकाळू डरती नवै सुहाग रे
बनड़ा सूं सेंधी होवै बीनणी

धीरज बंधावो बाई सासरै
कोई तो मावो अमर सुहाग रे
गीतां वधावो वांरी प्रीतड़ी

कुण तो छिपावै साधां अरगणी
छांनै ओलै रो ज्यांरै पेट रे
गीतां में गावै वंस वधावणो

कांन्हूड़ो झूलै सोवन पालणै
मावड़ क्यू बैठै मुडो भीच रे
हिवड़ा सू छळकै भोळी लोरियां

प्रीत तो लगाई, बाई पीपळी
चाल्या कमाऊ जद परदेस रे
ऊंची चढ जोवै बिरहण बाटड़ी

नैणां रा आसू पूछै गीतड़ा
गीतां सू घटसी काळी रैण रे
गीतां सू ओछा दिवस विछोह रा

गीतां रा भेजो कोई बादळा
ढाढ़ी सुणावै धण रा गीत रे
गीता री कुरजां हाथ सनेसड़ा

गीतां रै समचै चालै सासवां
भाई बैनां रा गाढ़ा हेत रे
गीतां में देवर नणदां लाडली

कुण तो ब्यायण नैं देवै सीठणा
कियां जंवाई जीमै थाळ रे
गीतां बिन कुण तो सगपण सांचवै

बिखरण तो लागी बंधी बुहारियां
गीतां सूं रोपो कुळ री काण रे
गीतां बिन कुटुम कवीला तूटसी

सूनो वळै रे दीयो आंगणै
गीतां बिन तूठै कोनी देव रे
गीतां नै उडीकै मिंदर आरती

गीतां में तुळछां गवरां पूजणी
तीरथ बरता रा साचा नेम रे
नूंवै गीता बिन टळिया जावसी

भगवां तो धारचा साधू मातमा
गीतां बिन कोठै आतम ग्यांन रे
नूंवै धरमां रा नूंवा गीतड़ा

मिट ज्यासी इतियासां रा पानड़ा
वीरत कीरत रै जस री देह रे
गीतां में जुग-जुग ताई जीवसी

गीतां बुलाई आई बादळी
आसूदी धरती रो अळसोट रे
गीतां बिन कियां होवै हळसोतियो

गीतां रा काढ़ो खेतां ऊमरा
गावो तेजा री तीखी ढाळ रे
गीतां सूं भर लेवो बीजोळियो

गीतां बिन धूजै कूवै कीलियो
पांणतियो धूजै धोरां नीर रे
गीतां बिन दोरी रात रूखाळणी

नूंवी तो भणतां गावै वायला
गीतां बिन कोनी होवै ल्हास रे
गीतां सूं ऊंची आवै पूंजळी

गीता बिन गीयाळा नै काटणो
गीतां बिन कैहड़ा कंथ बसंत रे
गीता बिन कैहड़ो सावण भादवो

गीतड़ला गावै भीणो वायरो
गीता सूं ऊगै सूरज-चांद रे
गीता बिन रितुवा फिरणो छोडसी

गीता बिन कोनी नदिया खळखळै
गीतां बिन कोनी ऊगै फूल रे
गीतां बिन कोनी दीवा जगमगै

गीता बिना प्रीतां तो रुळियारगी
गीतां बिना जाया पूत कपूत रे
गीता बिन परणी घाटा लांघसी

गीता मे जलमै जीवै मांनखा
गीतां मे जागै सबळ समाज रे
गीतां में आखा जुग नै जीवणो

पग-पग तो जीवण मागै गीतड़ा
आवो रे कवियां म्हारै साथ रे
जुग नै नूवै गीतां सू घेरल्या ।

सोवन माछळी

सांझ तो पड़ी नै बड़ग्यो नीर में वैरी
आ थारी मछवा बाण कुबांण
छोळां सूं टाळै गिण गिण माछळी

क्यूं थूं हिवोळै ऊंडा समंद ने रे मछवा
क्यूं थू पसारै भीणा जाळ
खारा समंदां री खारी माछळी

पाछो तो वावड़ थारी झूपड़ी रे मछवा
थारी थाळी मे चांनण चौक
तड़फा तोड़ं रे सोवन माछळी

सात्यू समंदा नै राखै नैणा मांयनै रे मछवा
होठा विच साचा मोती सात
मीठा पांणी री सोवन माछळी

कैवै तो चीरु कवळो काळजो रे मछवा
माथै भुरकाऊ तीखो लूण
काटां विना री सोवन माछळी

तेल में तळू रे थारै रांम रसोड़ै मछवा
नीचै सिळगाऊ मधरी आच
छिण छिण सीझै रे सोवन माछली

धोया-धोया थाळां पुरसू आधी रै अमलां मछवा
अलंध झरोखै जोवू वाट
अंग तो मरोड़ै सोवन माछळी

मुंडो अेंठण ढळती रा काई आवै रे मछवा
पैला ई क्यूं नीं लेवै चाख
जतनां सू राधी सोवन माछळी

कैवै तो वेचा सोवन माछळी रे मछवा
वेचनै चिणावां ऊंचा म्हैल
छोडा समंदा में पाछी माछळी ।

जागण रो गीत

मीच आखड़ियां. कर अधारो
मत अंधारो सहो

जागता रहो
ताकता रहो
जागता रहो
सपनां रो राजा चंदरमा, इमरत पी मर जासी
सोना री जागीरा खोकर सैं तारा घर जासी
छिण मे उठसी रैणादे रा काळा पड़दा
चन्नाणा री किरणां सू ठगणी छियां डर जासी
नवी जोत मे राख भरोसो
नवी कहाणियां कहो
जागता रहो

सीटी रो सरणाटो बाजै, मील मजूरी चालां
खेतां में पंछोड़ा बोलै, हळ रा ठाट संभाळां
हाट हटड़ियां खोलां, दिन री वाळद आई
मैंणत भूखी रहै न कालै, इसो जमानो पाळां
ऊगै है सोना रो सूरज
मत आळस में वहो
जागता रहो।

जीवण रा दीया

मारग रा दीया रे
थोथी थळियां रा ऊजड़ पंथ
चांदो तो छिपग्यो, किरत्यां ढळ रही
डरतो उगेरै तीखो गीत
चालै थकाळू डांडी अेकलो
सिझ्या रा जाया ! थारो हेत
वासो तो छोड्यो सगळी रात रो
भिलमिलतो दीसै रे उजास
जोत नै मिळाजै पीळा भोर सू

मेड़ी रा दीया रे
कोई संचायो तेल चंपेल
वाटां वटाई पीळै चीर री
सजिया रे सिझ्या रा सिणगार
गोखै संजोयो थांरो चांनणो
काळी रे कार्जाळया री रेख
थारै सरीसी गोरी देहड़ी
वळजै रे जद लग जोवै वाट
वधजै जद पीया आवै सेज में

मिंदर रा दीया रे
गूंगी पड़ी रे झाझ मंजीर
सूनी परकमा, सूनो आंगणो
देवां री पूजा थारै हाथ
रातीजोगा री थारी चोलवा
भगतां नै मिळियोड़ा वरदान
थू ई भर लीजै थारी खोळ में
कर लीजै आगोतर री वात
भाटां रो भरोसो कालै कुण करै

माटी रा दीया रे
सूरज सू ऊंचो थारो वंस
मावस रै मोड़ै थू ई जूझियो
लेखा तो वाचै थारी छांव
जोगण, विजोगण,देवी देवता
मांझल रै जीवण रा सैनाण
सोई धरती री सांसां कुण गिणै
वळियां ई जाग्या रैसी प्रांण
बुझियां तो जीवण जासी जीव सू ।

□

'साहित्य जिकां सांच सूं बाथेड़ो करै, वो इतिहास ज्यूं, काळ सापेख कोनी होवै। इण कारण जद कोई काळ रो इतियास, साहित्य मे ऊतरै तो वो अणत-मोलां रा पख में होवै, इण के उण पात्र रा हक मे कोनी होवै। साहित्य घड़ी-घड़ी इतियास नै आपरी कसौटी माथै जांचै-परखै। इतियास नीं आपरो नजरियो बदळै-नीं कंयोड़ी बात सूं ज्यादा बता सकै जद कै साहित्य सारू अंडी कोई सींव नीं होवै।'

बोल भारमली

1974

• अपरंच • रूप • सावो • सवाग • जाळो
• विराग • अडवाणो • प्रीत • आप
• साख राजा मालदेव री • साख राणी उमादे री • अंताखरी

अपरंच

म्है कुण हूं ?
प्रीत रा पुस्करजी रै पावन पगोतियै
फागणिया हथेळियां ऊग्योड़ा
लीला जवारा वोळावती गिणगोर ?
कै चांद री इमरत डोळियां रै ऊपरवाड़ी
वरसता मेघां ज्यूं ढळती
माटी री तीतर-पांखी सोरभ झिकोर ?

म्हैं कुण हूं ?
इतियास री खड़ग-लेखणी सूं
रगत-मसी में सीवा बदळता भूगोल रा
अडोळा चितराम री खांडी कोर ?
कै रंगसाळ में चितारियोड़ी
ऊभी आंगळियां सांनी करती
कुळ वहुवां रै डावर नैणा झरती
भाटा री नागी पूतळी रा लेवड़ा री लोर ?

म्हैं कुण हूं ?
तोड ज्यू उछेरी म्हनैं धोरा जैसलमेर
झेकाई वाळू रेत
थड़ री साख वाधी
सिणगारी सोनलियै गिरवांण
गोरबंध कवडाळां;
झीरी नागरवेल,
तो ई बाजती नळियां
विछटगी झोर सूं
कतारियां रै देखतां-देखता !

पाळिया वासक म्है
मनड़ा रै रोहिणी द्रुमां
रचन-कचोळां ईसका पय पायो
डाढां डसायो कंवलो काळजो
विस री गहळ वितायो
रांमतिया-रमतो वाळापण

सूघती चंपा री चौथी पांखड़ी
पूगी वागां मडोवर रै
चरती आफूनी रा फूल हिरणी ज्यू
सोई मेहूड़ा री छांव
गुळक्यारां फाळ सांध्या
इमरत कर पीवी म्हैं
रविजळ री छळ-छौळां !

वदळो चुकायो यूं
अणजाण्या मावीतां रै पाप रो,
धुतकारां, ओझाड़ां, संताप रो,
अणसमता हाचळ चूंघ्या दूध,
फाटै गावां री
गाठ घुली निरधनता,
हटक रै होड़ां दियै जोवन रो,
रोक-टोक रमता रूप रो,
वचपण रो,
मेहणा री वोली रो,
नारी निवळी रो
गोली रो

जोवन रै कामरूप वादळां री रीभ
टहूकी जोधाणे टेकरियां लाल सिहरां,
मोर ज्यूं पांखां रा छतर तांण !
पण देख पगां साम्ही
ढळकाया आंसूड़ा
कोट-कोट, कांगरै-कांगरै

तनवन राज कियो जोबन सादूळां
सरवर री पाळ
मदगहळी गजगांमण सू करी चूक
कुभ नै विदार गजमोती लिया काढ
मान कियो धणियाणी,
मांणी तो राज-सेज मौजां वस म्हैं मांणी

हिंगळू ढोलिया रै वादळ पथरणै
जठै-जठै म्हैं फेरिया पसवाड़ा
उठै-उठै विगसिया फूल
रातराणी, चंपा, गुलाव रा
अर सपना रै ममदर-तकियै
जठै-जठै ओसरिया मोती नीरद-नैणां
उठै-उठै भरग्या
पीछोला, वाळसमंद, आनासागर !

तरणापै अंतेवर अकमाळा
भीमळ-नयण मारग नीहाळती
प्रीत री पुरवाई रा सदेस री
कुरळाई रत-पखी कुरझड़ ज्यू
'तिरसी हू, तिरसी हू'
सेवट उडगी सरवर रै ईरां-तीरा
जोड़ी सू जुड़ण
मनड़ा रै कोटड़ै

गोली वण भावन रची भाटिया री
राणी वण रंग दियो राठौड़ां
झोरावा गाया कोटड़िया रा
संपूरण नारी ज्यूं

म्हैं कुण हूं ?
जिणरै कू-कू पगल्यां री खोज
'खोज गई' गाळ खाय
ओठै-ओठै हालती कुळवहुवां
सतियां के राणियां !

प्रीत री कामधेण म्है तो
समाज रै मीट-मारग
(मुईदार ज्यू)
टणमण टोकरा वजावती
आगै निकळगी छांग रै
टळगी म्है टोळी सूं

म्हनै टोळण आया 'आसाजी'
दूवा सोरठा गीतां कवितां रै टिचकारै
पण म्है वधतीगी
खेतां-खेतां, सरवरां-पोखरां,
वागां-वगीचां, चरणोयां
थळां-मरुथळां

म्हैं कुण हूं ?
बाघाजी रो जस-अपजस
हिवाळां ऊंचो, ऊंडो महराणां ?
कविता कोटड़िया री
अरथां, संकेतां, सबदां परवारी ?
परोकी प्रीत ?
नेह गाढा मारु रो ?
बिना हाथ हथळेवो ?
गांठ बिना गंठजोड़ो ?
बिन सावा परण्योड़ी ?
जलमी कठै, पाळी कुण
किणरो म्है घर मांड्यो
सती हुई किण साथै
आडी ज्यूं समाज री

म्हैं कुण हूं ?
सरीरां असरीरी ?
नाम जात कुळ विहूणी
क्रौंच पांखी आद कवि री ?

चंडाळी ?
खंडाळी
रूप री वणजारण
वडारण जोबन री ?
आदण ईसका रो
रेख के हथाळी री
लीक सू टळियोड़ी
उछाळो दवियोड़ी माटी रो ?

ध्याव सुरसत नै, सिमर गणपत जद
मांडोला छंदा-अछंदां
सबदा में बाधोना प्रीत री कथा कोई
वरणोला नारी नै
थे ई बतावोला पीढ़ियां नै
'कुण हूं म्है,
भासा रा भावी कविसरां !

रूप

जद रतन तळाई रै
आडा टेढा पड़दा बंधाय,
झोलण जावती राजकंवरी
सहैल्यां रै झूलरै
म्है उतारती निवसण सगळा सूं पैला
अर पाणी रा दरपण में
निहाळती म्हारो रूप
मैला गाभा सूं मुगत
म्है अेक देही जात
जद ढोळती म्हारै अपधन रो
रूप कूपळो निरमळ नीर
घुळ जावती म्हारी कू कू पगथळियां जळ मे,

ससहूर ज्यूं पळकती
म्हारै मुखड़ा री पड़छाया
अर तिरती छौळां माथै
म्हारी मुळक हंस री पांख ज्यूं !

पण ओझाड़ा खाय
निकळणो पड़तो नाडी रै वारै
अर धूजतै डीलां पैरणी पड़ती
कंवरी री उतरचोड़ी पोसाकां !
उमगंतै अंगां काटती खड़पां
कांचळी फाट्योड़ा टूकिया
विना अंतरसेवै कळियां रो घाघरो
अर बदरंग लूघड़ी !

अणसमझ म्है बूझती रोजीना
थूं म्हारै डील क्यू आयो
हे कामणगारा रूप !
थारै ओपतो सिणगार कठा सूं लाऊं
च्यार दिनां रा पावणा !

सावो

जद सूं नारेळ झेलियो
मालदेवजी
राजकंवरी रो सुभाव की बदळतो लागै
आजकाल ना भरै सेजां भेळी
ना करावै म्हनै मरदानो भेख
अणमणी रैवै आखो दिन !

गुमेज री की वात ?
राठौड़ां नै भाटियां री डीकरियां रो
सदा सूं ई चाव !

पछै जोधाणै रो धणी
पग पसारै अजमेर तांई
चोखो वचायो जैसलमेर
गीध री अणियाळी मीट सूं
गढ सू परणीजतो गढ़ !
राज सू फेरा राज रा !

धसमस धोया जैसांणगढ रा
पीळा जाळी झरोखा,
सिणगारघा कोट कांगरा !
ठाकरां उमरावा रो थट्ट गरणावै
बुरजां, म्हैलां, माळियां !
घुरीजती नौवत अर सरणाई रै सुरां समचै
टाळी म्हनै दायजै देवण
डावड़ी ज्यूं
हाथी, घोड़ा, करहला, बळदां,
सोना-रूपा, हीरा-पन्नां,
गाभां—पोसाकां
रथ अर पालकी साथै

दूह दड़ादड़ ! दूह दड़ादड़ !
सुणीजै नगारां री धोक
राठौड़ां री चढती जान री
कळहळ रो सरणाटो गढ रा चौक में
ब्याव रै उमावै
राग रंग में रीझतो रजवाड़ो
बुरजां में बतळावै सूरमा सैणां सूं
जनानी डोढ़ी गीतां रै बायरै
सिणगारै बाजोट बिराजी बीनणी नै
सौरभ सूं गरणायै आंगणै

केसरिया कसूंमल रै दळ बादळ
सोधै भारमली अेक उणियारो
जिको उबारी उणनै अेक रात

समद म्हैल में
अर अेक ई निजर में
करदी अनुरागण पौरूस री !

पखार लेवती अेक वार
उण अणजाण्या पौरूस रा कूकूं चरण !
समरपण रा पुसब भर आंचळ
उतार लेवती आरती देवता री
अर नैणां में सावळ झांक
धर देवती उण मन में
म्हारै हीया री हेमांणी
विदा होवण सू पैलां !

सवाग

अजमेर आयां कित्ता दिन होयग्या
अेक वार ई कोनी दिख्यो परणेत
दीख्यो ई होवै कुण जांणै
नाम नाम सुण्यो है कानां
अेक-दूजा नैं ओळखां कोनी !

तो ई सुख है परणीज्योड़ी वाजण में
कोई री होवण में

तीजैं पौर आयग्यो बोड़ो अनदाता रो
पानां री छाव
पोसाकां, गैणां, अंतरदान
केसर कस्तूरी
मिठाई री छावां

म्है खुद डोढी सूं लाई बीड़ो
अर राणी उमादे भटियाणी रो
सवाग विड़दावतो
थाळ में घलाई पच्चीस मोहरा।

राणी जी नैं अंगोळी कराई
सौरभ री दपटां
दीवा जुपाया गोखै-गोखै
आळै-आळै चढाया पूजा रा पुसब
नख सिख सिणगारण लागी
चतर डावड़ियां !

हाल मोत्यां री लड़ाई कोनी
गूंथी ही चोटी रै
कै पधारग्या पिण्डा म्हैला में !
धूजगी कंवरी रै हाथ री आरसी
हळफळायगी अवरी डावड़ियां
आंचै-आंचै सारण लागी काजळ
अर विगाड़ण लागी
रळियामणो सिणगार !

म्है पूगी रंगम्हैलां
आधो घूघटो खेंच
सेजां रा सिणगार अनदाता नै
मुजरो अरज करती
घड़ी—अधघड़ी विलमायां राखण।

म्हारै बिछिया रै घूघरां रै
खणका री अगवाणी
लड़थड़ता अनदाता
भरली म्हनैं भुजावां में।
अर म्हारै बोल्यां पैली ढंक दी
म्हारी अधरज आपरै होठां सूं

समभी कोनी
उतरतै सोळवैं सईका रै चेत री चवदस
अेकाअेक वणता इतियास नै
ढरगी
इण अचीत्या अणाहूत सू
आहेड़ी सांम्है हिरणी ज्यू ।

प्रथीनाथ,
जिकां री दुधारां लचकै
सूरां री खेटक ।
धूजै मारवाड़, नागौर, सोजत
अर अजमेर री गिरद,
भीचै बरजोरी
कादम्बरी री गहळ
दायजै आई अेक डावड़ी नै !
भारमली नट कोनी सकी
झूठ मत बोल भारमली !

जद सैलां रो सांवत,
नरपत,
पड़वै रा आरण में चढ़ाय लिया
पंचसायक कंदरप ज्यूं म्हारै सांम्ही
मोह मूरछा रै पांण
म्है ई बणगी छळगारी
समोवड़ करण नै !

धुपता लाग्या म्हनै
म्हारा सम्बोधन, विसेसण
बदळतो करता, बदळती क्रियावां !

मांग में घालै जिणरो सिंदूर !
बदळा री रात दूजी वार कोनी आवै !
म्है राणी क्यूं कोनी बण सकूं ?

बस, म्है ई चाख लियो दुवारो
अर नटती नटती, माथो हिलावती
पलकां नै तिरछी तणाय
लूमगी नरनाह रै
संपूरण अंगां, संपूरण संगां
अंगरळी रै पैलै सवाद में !

कुण जांणै कद आई उमादे
अर ठोकर सूं गुड़ायगी पीळजोतां !
लाल किंवाड़ी रो खुड़को ई कोनी सुणीज्यो
दिन ऊगां फगत लाध्या
धरती पड़ी म्हारी कांचळी रै लाग्योड़ा
भटियाणी जी रै काजळ टीकी रा
पूंछ्योड़ा अहनाण !
कुडाळी बण आंगणै ढळक्योड़ा
म्हारा घाघरा माथै
ठोकर रा सळ ।
भींतां माथै चिपियोड़ी गाळियां ।
मोड़ै ढळक्योड़ा आंसू
अर चौबारै बिखरयोड़ी
चूड़ियां, बीटियां, रिमझोळां,
करणफूल, बोर अर बाजूबंद ।

म्है दूजै दिन जागी ।

जाळो

सुणियो अेक दिन
कवराजा ईसरदासजी सूं बंतळ करता
अनदाता नै हर आयगी
राणी उमादे भटियाणी री ।

'कविराजा, देखू थांरी सुरसत रो परताप
मनाय लावो राणी नै
रूसणो भंगावो।'

पैलीवार चेती म्हे
धारणा री मोह-धरती सूं—
कोई खांमी है इण राजा रै मरद रूप में।
इचरज होयो म्हनैं
परण्योड़ी लुगाई रूठगी इण आदमी री ?
हथलेवा रो दाग ई दाग लाग्यो
इण बींद रै ?
बीनणी भींटीजी ई कोनी इणरा अंगां सूं ?
हैं.....?
घरवासो कोनी होयो इण निरभाग्या रो ?

अर ओ मरद भेजै
अेक कवि नै, आपरी परण्योड़ी मनावण ?
दो प्रेमियां रै बिचाळै
हेत रो मूंन ई जद रचदै
सौ सौ त्रिकूटबंध,
अर अेक-अेक सबद रो उच्चारण
बण जावै सुपंखड़ो, सावभड़ो, मंदाक्राता,
पछै हेत रै सिवाय किसी कविता
मांगै रूसणो अेक मांनेतण रो।
म्हारी जांण में
प्रेमी ई होया करै कवि काळीदास

सुण्यो कदैई कोई ढोलो
अेक तीजा पुरुस नै भेजै
आपरी मरवण मनावण नै ?

क्यूं कोनी ओ पुरस
झाल आपरी प्रांणप्यारी रा रेसमिया कुतळ
कर दै अबोट चंदरमुख आभा सांम्ही

अर उणरा दरपण-नैणा मे नैण घाल
कर दै नेह रो वो संकेत
जिकां सू दामणी सी चमक जावै
नारी री रूंआळी रूआळी
अर मुग्ध होयोड़ी वा
नट जावै, नटिया जावै, नटती ई जावै ।

धरती रो भार धारण वाळी
अे भुजावां क्यूं कोनी बांध सकै
आपरी तिरिया री पुसब काया ?
कोई खांमी है इण राजा रै नरापण में ।

अर आखा नारी लोक में
म्है भारमली ही लाधी भागहीण,
जिकी सोयगी इण अणवर साथै ?

जिका मरद नै नैड़ो कोनी आवण दियो
कोई लुगाई आपरा रूप मंडळ रै
उणनै जीत. अंजसै भारमल ?
इत्तो पत्तन म्हारो ?

समझतां ई परसेवो फूटग्यो म्हारै अंगां
अपूठी होय पूछ लिया
म्है अडवड़ता आंसू
भागी म्हैला में दरपण रै रूबरू,
काळी छियां-सी पसरगी
नैणां रै हेठै ।
अवरोही जोबन रै पिणघट
ढळग्या कुच-कळस
चामड़ी लटकती-सी लागी
भुजावां री

सुण्यो ईसरदासजी भंगाय दियो रूसणो
मांन छोड़ अठवाळी बिराजगी राणी
जोधपुर आवण नै ।

म्है वधारचा नाळेर देवी रै ।
नाचण लागी अणूता मोदी में ।
गुमेज है म्हनैं
अेक आंटीलो, लोही तिरसो,
नारी मन री साधां सू अणजाण मरद
म्हारै कारण रळी तो करी दूजी नारी री ।

पलकां सूं बुहारयोड़ी सेज री
अनग-रज में लुटयोड़ी काया
अेक अणघड़ नर री
फुरण तो लागी नेह रै नगारां ।

म्है खाद ज्यूं तो रळी
अेक पुसब रै बिगसाव में ।
अकारथ कोनी होई म्हारी गीत संगीत वारणी
अंग मरोड़णो कांचळियां उतारणो ।

म्है जाणू, म्हैं कोनी लियो जलम
कोई राजा रै घरै ।
कोनी जलमी कोई राणी री कूख ।
पाछो म्हारी कूख जलम्यो
कोनी बणैला राजा ।
पण पछतावो कोनी म्हारा नाम जात
कुळ विहूणा जलम माथै
मत वणो भलां ई राज कंवरां री मां
म्है अेक सम्पूरण नारी तो बणगी ।

कै आया समाचार कोसाना सूं
पाछी फिरगी राणी री पालकी ।
आसाजी वारहठ कैयो बतावै दूहो
मांन अर पीव रै दो दो गयन्दा रै
अेकै कंवूठांण बंधण रो ।

घणी रीस आई वारहठजी माथ
पांणी फेर दियो वै म्हारी साधना रै
म्हनै उबारण री हूंस में ।
सांचाणी गैला होवै दोनूं—कवि अर प्रेमी ।

विराग

आरण सूं बावड़ता जोधारां रो
जद उतारूं आरतो,
झटकूं पोसाकां चढी खंख,
अर धोवूं चाठा लाग्योड़ा कड़ियाळ।
यूं लागै जांणै म्है पूंछूं
न्हारा, बघेरां रींछां री
लप-लप करती जीभां ।

सूरां रै कपाळ प्रहार करता सुभट
काई सांचांणी भूल जावै
म्हारो फूलां गूथ्यो सीस,
आपरै खांधै टिकियोड़ो
सिझा रा सिंदूरी पळका में ?
भड़ां रै उरांट सैलां रा धमोड़ा मारता
काई वै पांतर जावै
आपरै भुजअंतर भिड़ता
म्हारा पयोधरां नै ?

संघार कियोड़ा वीरां रै पेट सूं
जद निकळै अंत्रावळियां
कांई वांनै कोनी रळी आवै
म्हारी नाभी कनै ऊगी रोमलता री ?

खागां सूं न्हावणिया म्हारा राज,
कदेई तो कोनी करी मनसा

म्हनैं छाती सूं लगाय
बरसता मेह में भीजण री।

अर जद जद म्हारा इमरत परस सूं
बोली में मद घोळ
अरज करूं जंक लेवण री
वैं म्हनैं निवसण कर देवै
डावड़ियां रै देखतां देखतां
अर जिनावर ज्यूं मिटाय लेवै
आपरी भूख रीसां बळता।

मरण कोडियाळ, कद समझै
सूछम भोग रो सुरगाळो मरम।

अडवाणो

तिरस रा अेक पड़ाव सूं
दूजै पड़ाव।

जैसलमेर आयगी हूं म्हारै पीवर
कोई ठपको कोनी दियो
बाइसा साथै चूक करण रो।
मालदेवजी री अेक सोवणी सूं ई
धूजता लागै केई गढ कोट।
वैजयंती ज्यूं फरकूं म्हैं
देसां रै व्योमाळ
मनां रै देवळ।
कोई सांम्ही मींट कोनी करै

आपरै अंकां कोनी उठाई
मालदेवजी म्हनैं ऊमा रै भरम।

मांन दियो वै अेक अणखी रूप नै ।
छांनै कोनी राखी आपरी प्रीत
अर छळ कोनी कियो भोग सूं ।
ओछो तुलग्यो वो म्हारी ताकड़ी
भोग रा संपूरण अरथां में ।
कोनी भोग सकियो नित नई जीत्योड़ी-धरती
कोनी रिझाय सकियो भारमली सिवाय
कोई अवर नारी ।
अधूरो वीर, अधूरो भूपत ।
आधो पुरुस, आधो भंवरो ।।

दूजी कांनी म्हैं भारमली ।
जठीनै मोड दियो आपरो अंग वाहण
जठीनै संधाण कियो जोवन रो पुहप धनख,
जठीनै वाही रूप री खागां
बाजतै ढोलां जीत लिया मनां रा गढ़
धराधार करदी जूझारां री अखोणियां ।
संपूरण भोग सू ओछो
न लियो, न दियो ।

अर ओ अलबेलो राजकंवर ?
अेक कापुरुस ।
रगत री झूठी सौरभ रै कळंक रा
मसाणिया हेला रो चाठो
कठै आयगी म्है ?

जांणै पावासर रो हंस
मोती चुगण उतरग्यो ओछै नाडै
जांणै मरू में भटक्योड़ो किस्तूरी-मिरग
पूगग्यो करदम सरोवर ।
हाल क्यांरा कोनी पूग्यो नीर
रळक्यो कोनी धोरां
लागै अडवाणो कियो है पांणतियो ।

प्रीत

रूप री अेक पीड़ है
रसैला घावां सूं ऊंडी
राग रा सुरां सूं तीखी
अकथ अर अरूपी !
रीझणहार री मींट में होवै उणरो जलम
अर रसिया री निजर सूं
हेठै पड़तां ई
अकाळ मर जावै वो !
रूप री ऊमर कोनी आवै !

नीतर जिकी डावड़ी रो रैण-सिणगार करतां
म्है देख्या बाघाजी नै—
गाल रै तिल लगावतां,
वेणी में फूलां रो चोसरो टांकतां,
टीकी में चंदरमा कोरतां
पगा में मेहदी रचतां
नखां रै धार देवतां
अर सोरभ में भिजोय भिजोय उणनै
अंग लगावतां
वा मुळगै ई सुन्दर कोनी ही ।

अठीनै म्हे,
जिकी अेक निजर में उछेर दूं
हजारां करहलां री झोकां
चिट्टूड़ी रै अधर संकेतां डुवाय दूं
आडां ज्यूं समदर तिरती
अलेखां खेवणियां,
अेक मुळक मे छुडाय दूं
भूपाळा रा मुगट-सिंघासण
लारला कित्ता दिनां सूं
घेर-घुमेर घाघरा रा फटकारा देवती

फिरूं वाघाजी रै पड़वै
पण कोनी मिलै रीझ रो आऊकार !
जित्ती वार अेकायत मे
अेकला मिलण री चेस्टा करी म्हैं
म्हनै लाधा वै जुगल रूप में
अर टळता गया
म्हारै मिलण रा मौहरत !

कद देऊं इण अरजण-पुरुस रा
सीस नैं छाती रा भूघरां वीच विसांई ?
आखा ससहर आनन माथै झेलूं
अधर पारळ रा दाझता घाव ?
अर अंकां में कसती-कसीजती
हो जाऊं इण लोक सू अंतरधांण ?

वाघाजी रा आऊकार विना
मरगी राम जाणै संसार री कित्ती भामणियां
तिरसी, झुरती, अण वोली !
अंजसै भारमली रो लुगाई पणो
म्हनै टाळी वै टोळी सूं !

म्हैं ई अनग रै भरोसै ठगीजी
कित्ता अंगां सूं !
लोगां जांण्यो भारमली माल्है
जोधपुर, अजमेर, जैसलमेर रै राजम्हैलां
अर म्हैं, महादेव रै चढावण जोगा
आकडोडियां सू पूज्यां गई
सतमासिया मरद, अधूरा प्रेमी
चोर अर लतिया !

वाघाजी सोधली आपरी कल्पना
टहूकती मगरां मगरां
अर अेक भटकतो अरध मंडळ
भिळग्यो दूजा अरध मंडळ सूं
संपूरण मंडळ रो आकार धारण करण नै !

वाघो म्हारो भव भव रो भरतार !
उतारी कोनी आबरू अॅठवाड़ी जांण
समझ लियो मरम पौळ पौळ चढ़ण रो
पिणघट पिणघट नीर भरण रो,
गळी-गळी रास रमण रो
विना वतायां !

वाघो म्हारो भव-भव रो भरतार !
जिकां री रूठै कोनी परणेत
जिकां रो खोसै कोनी कोई धरती
जिकां री अणत भोग्या हू म्हैं, न पैली न छेली !

वाघो म्हारो भव-भव रो भरतार !
जिकां री आसुरी भुजावां में
कसण दूं म्हारी बीजळ-काया !
उघाड़ूं घडी घड़ी ढंकण नै,
मूंछां रै लगायां राखूं होठां री पांखड़ी
अर रगत रा उछाळा ढाळचां जाऊं
झव-झव करता अंक में !

वाघो म्हारो भव-भव रो भरतार
जिको अरथ दियो म्हारा जीवण नै,
रगत नै रंग देय
रूप नै सिखायो संगीत
अर कविता दी अरूप प्राणां नै !

वाघो म्हारो भव-भव रो भरतार !
भोग नै वदळ दियो भगती में
ध्यान धर अरचना करी
देवां री आरती ज्यूं
जोत जगाई देह रै देवरै !
वाघो म्हारो भव-भव रो भरतार !

आप

म्हारी बात करती करती म्है
क्यू करण लागगी आपरी बात ?
सुर क्यू बदळग्या म्हारी कथणी रा ?

आप सू सनमन होयां
दीठ बदळगी है म्हारी !
मरू रै कण कण म्हनै नाचती दीसै निरजरियां
कांमलतावां लूमी है कलपद्रुमां रै;
रंग-झड़ लागी है, रजरमता अणगिणत फूलां में

मीठी लागै आपरी दियोड़ी पीड़
होठां माथै हरिया घाव दांतां रा
नखां छिदियोड़ा उरंग
अर केवड़ा रो चुभियोड़ो कांटो
अपधन रै रेसमिया पाट-पल्लै !

लावो आपरो सीस
म्हारी छाती माथै टिकाय
गीतां सूं थेपड़ दूं पलकां !
लावो होठां सूं होठ उळझाय
आपां फूंकदां प्राण, पिंजरां में !

हां, कसलो
कसलो आपरी बळी भुजावां में
म्हारो इकलेवड़ो बीजळ गात !
मालदेवजी रा भेज्या
आया आसाजी बारहठ म्हनै पाछी ले जावण
आयगी होवैला ओळूं राजा नै
अर आपरी कुबांण रै पांण
वहीर कर दिया होवैला कवीसर

छंद नै भांग
कविता रो अेक चरण पाछो लावण नै !

जाणूं हूं
छायालोक में सपनां रो संसार रचावणिया
कवीसरां री सिद्धवाचा रो परताप !
अर जाणू हूं
कवि सू ऊंडी समझ कोनी होवै
कोई में कविता री;
देही रै डाळां, कांम रै तिणकलां सूं
अेक बसेरा रो सिरजण
म्हारो जीवण-काव्य !
गुणो, कवीसर ! गुणो !

काठी चिपगी म्है बाबाजी रै
गळा में घाल हाथ
अरध चंद्राकार लूमगी
भुज अंतर टिकाय म्हारो सीस
सुरसरी ज्यूं बणगी तरळ
नैण मूंद अंगेज लिया देवाधिदेव नै !

आसाजी रै च्यारूंमेर घूमण लाग्यो ब्रह्माण्ड
राधा अर स्याम री जुगत छिब
झब झब करण लागी नैणां में !
अर कल्पना सिरजण लागी रूप—

भूल सगळा मनोरथ,
आसाजी करली डंडोत इण विराट दरसण नै
आसण री आसका चढायली माथै
अर नीझर ज्यूं खळकण लाग्या
वांणी रा वरदान—

नमो सैळ कैळास सिखरा, महेसर
नमो अरध-अंगी, सती-गोरजा वर

नमो जोग जोगांण, करतळ गरळ धर
नमो मार मारण सुरसरी सीस, ईसर
नमो अेकलिगी, भूतेस-काय:
नमो सिवाय: नमो सिवाय:

नमो मोहिनी रै भुवन रूप रोंझळ
नमो भुजउंचायां सती देह निह्चळ
नमो जळमअंतर उमा रा वरणवर
नमो उरधलिंगी, जटाधर सुधाकर

नमो परमगुर, अणत, विस्वनाय:
नमो सिवाय: नमो सिवाय:

साख राजा मालदेव री

म्है भांगिया नित नया खितिज
नित नया भुरजाळ।
जठै जठै वजाई रूक
रणमल्लां रा मुडां सू पाट दी मेदनी;
अर अजेय म्हारी कटक
लारला दस वरसां में जीत लिया तेतीस मुलक

रण रो रसियो म्है
म्हारै पराक्रम, विपख जोवै
आपरै पराभव री वाट !
साधारण समझ नै पांतरग्यो
'सेजां रै समर कोई पख हारै कोनी'
खड़ग सू कोनी मरै अनंग
सैलां सूं विधै कोनी !
कळा है कांमण नै जीतणो !

सोधतो कोनी म्हैं, गमियां थनै !
मरियां, कोनी करतो पछतावो
पण थूं म्हारा पुरसारथ री उतार पांण
वर लियो अेक कवि नैं ।
तीखड़ी बोर जैड़ा कोटड़ा रा
धाड़ायत वाघा नैं ?

भारमली हरायदी म्हनैं
मेहणो लगाय दियो म्हारा पुरसारथ रैं
अै व्रणां री औखद कठै ?

अबै तो राणी ई कोनी चढैला
म्हारी पौळ
धरती ढवैला कोनी म्हारा सूं
अर कळंक लागैला म्हारा जस रै
विगतां में !

गुण गरभा भारमली !
थूं भर देवती म्हारी अपूरणता रा आळा
म्हनैं बणावती अेक पूरण नारी रो
पूरण पुरूस !
म्हनैं बगसती थारैं इमी कूंपळा री
अगोचर बूंदां !

म्हैं राजा सूं बण जावतो रंक
भसमी रमाय लेवता !

साख राणी उमादे री

भरोसो हो म्हनैं भारमली माथैं !
अेक वार तो हुई पीड़

उणनै म्हारी सेज, म्हारा ई धणी सूं
रळी रमतां देख !
पण जांणती म्हे,
भारमली सेवट सोधैला आपरो भरतार !

म्हे लुगायां,
सूप दै, जिकां रा माइत, अेक अणजांण पुरुस नैं
बांध दै गंठजोड़ा
कांपती हथेळी धर दै नर रा हाथ में,
गाजां वाजां हजारां गीतां वीच
अगन री साखी, समाज रै सांम्है
सीख लेवां दोरी-सोरी पुरूस सूं करती प्रीत !
तरसा छीकै पड़ी भोग री हांडी नै !
चळू चळू पीवां
अर परसाद ज्यूं चढावां माथा रै !

भारमली पोल खोल दी मोटै मरदां री !
फेरा खायोड़ी परणेतां
पूजती परमेसर ज्यूं जिकां नै
पण कोनी दे सकती संपूरण देही रो भोग !

म्है ई करली अेक भूल !
लोकां चावी होयगी रूठी राणी रा रूप में,
ओळखीजै म्हारो म्हैल
रूठी राणी रा म्हैल रै नांव सूं
बदळ कोनी सकूं
जस–देह सूं निकळ नारी देह में !
महाभारत रा गांगेय ज्यूं
म्हनैं ई जीवणी पड़ी
विरमचारणी री जूण
अेक अविचारी निस्चै रो
ढोल वजावण रै कारण !

बरस री अेक अेक रात
करियां गई कल्पना
भारमली री रळियां री
म्हारा धणी साथै !
अर उणरा पिंड री मारफत
भोग्यां गई भोग मन ई मन !

म्है छांट राखी मरद रा परसेवा सू
अर भारमली भोग भोग छितराय मरदां नै
दोनूं पूगा अेक ई सम माथै
अेक राग सूं, अेक विराग सूं,
'नारी बणावै सो नर'

अंताखरी

अंगां रो मेळो भरयां पैली आयगी
म्है भारमली इण भुवन में !
कूंकूं पगल्यां वसंत री अगवाणी
फूलां री जाजम विछावण
चंवर ढोळण मनसिजा री पालकी रै ।

म्हारै सांम्ही पसरयो है
भावी रो काळ हीण अंतरिच्छ !
तिरता दीसै म्हनैं प्रभंजण में
अणगिणत नीळज अंगनावां रा आकार
निरबंध, अणावरत
कांमासणा लीण,
ममता विहूणा, अगरभा;
सांवळा री गाळ, रागां रीझ्योड़ा !
पण कुण समझतो
नारी काया री कमेड़ी रो नखराळो मरम
मरदां रचियोड़ा जुग मे !

कुण समझतो संकेत
गढ-कोटां-रावळां री
वीजळसार पीळा लारै जलमता उछाळा री
कुण जांणतो
मिनखा जूण री वेदी रै ओळूं दोळूं
गोतर फेरा खावता भोग नै
म्है देह धारण कोनी करती तो !

ससार रा सगळा धन सूं इदको मोल है
थांरी देही रो, लुगायां !
'थे दुवार हो सगळी देहां रो !
थांरी देही बिना कोनी आवै
कोई आतमा, इं रळियामणा संसार में !

थे धारण करो गरभ में बेटा
अर यू ई बिना भेदभाव
धारण करो गरभ में बेटियां !
थे गरभ पूरणी मां हो अलेखा मावड़ियां री
थे जलम देवो डीकरा नै
जिका जोड़ायत बणै जांमणिया रा ।'

थे दूजी कुदरत हो विधाता री
पैली कुदरत री खांमिया पूरी करणवाळी
थांरी देही में बिलगै
छोटा अर मोटा-सगळा !

मां ज्यूं सुवाणो जिकां नै छाती माथै
ढांको आंचळ सूं होठां में हांचळ देवती
वै जवान होयां उणी भांत मांगै बिसांई
वल्लभा री छाती माथै
आंचळ री छीयां !
न्यारा-न्यारा रूपां में जीवो ।

□

'नर अर नारी रा संबंध, आदूकाळ सूं दो आधारां माथै जुड़्या करता। कुदरती अर सामाजिक। नर-नारी रा संबंध अबै ई सीमावा में सावळ बंधग्या होवै वा बात ई कोनी। वेद अर पुराणां री सैकड़ी कथावां इणरा सैकड़ी रूप बखाणै तो आज दिन ई इण रा अलेखां रूप देखण मे आवै।

गांगेय

1985

- तलाक री तांत
- बाप रा ब्याव में बेटो बिनायक
- प्रीत री पराछौत
- फूलां मरां तीरां मरां कोनी
- मां थारी गोद निवाई अे

तलाक री तांत

सात पूता नै समरपित धार में कर
आठवां नै जद उठा चाली
तरगाळी, अपाटा, हसहाळी;
रोक कोनी सक्यो राजा मन कुतूहळ
बूझ बैठ्यो—
ऊजळै चरितां अख्याती ! देव बाळा !
कठै म्हारै रगत री आ बेल,
ओ अवतस थू ओढाळ,
कर निरबंस थारा परम हेताळू,
सनेही सांतनू नै
क्यू कठै कांई करै है
पापनासी, अमर, अविनासी,
तरण-तारण, तरुण गंगे !
प्रिया हे
देव गंगे, वल्लभा हे !

रीझ म्हारी नै दियो थूं वेग, आऊकार,
म्हारी सेज चढगी
म्हनैं थारै अचपळै अंगां डुवायो
घेर म्हारी वासना सैपूर देही
पारदरसी नेह थारै !
हाल चितवण उरमियां थारै नयण री
पीवतो ई जा रैयो हूं
अर ज्यूं-ज्यूं डूब डूबू स्याम रंगां
ऊजळो तर ऊजळो वण, घाट औघट आ रह्यो हूं !

थूं म्हनें ओ भेद भोगां रो वतायो—
काम री झाळां दझ्योड़ा मरद नै

जे कांमणी गंगा सरीखी मिल सकै निस्पाप
तो तन, प्रांण, मन होवै अमर
वैता नीर ज्यूं नित निरमळा रे निरमळा !

हे पवीतां में परम पावन !
अमीणी पीढियां री थूं कठै करदै विसरजण ?
म्है करूं हूं जीव वरधापो,
नमन थारो करूं, कर जोड़,
म्हारा रगत रज सिरज्या महोबी वाळका नै बगस,
म्हारा प्रांण लेलै
अेक सैनांणी फगत आधा-अधूरा इण पुरूस री
वाळ म्हारो, पूत म्हारो छोड़ दै
अे माफ कर दै, म्हनें दे दै !
म्है थनै दीव चढाऊं
फूल चरणां में धरूं, पूजूं, करू हूं याचना !

घणो राजा गिड़गिड़ायो नेह भीमळ
घणी *करली अरचना आंसू भर्*या द्रिग
लोटग्यो धरती, विसारी कांण-मरजादा पुरुस री
इमी-घट-मुख सूं कैयो गंगा छळकती—
भूलग्यो भूपत ! दियोड़ा नेह वाचा ?
विगत रो संधांण करणो अेक दूजा रो मना है
जद खिचै दो पिण्ड, ग्रह, नखतां-नखत
आकरसण नियम सूं
नांम तांई जांणणो विरथा
परिचै न सामाजिक लगावां रो अरथ राखै
मिनख रै भोग में
देस जात समाज धरमां रा अदीठ बंधणा सूं
घणी ऊंची ऊरजा होवै
कांम रा कांमण अनळ री ।

म्हैं करूं कांई छिटक सेजां,
फिसळ भुजपास सूं;
क्रोड़ सूं कर सीस आगो,

नेह भरिया अंगदानां सूं विमुख हो
कांम म्हे कांई करूं ?
अे सवालां रा पडूतर
कुण होवै थूं मूढ बूझणहार, जाणंणहार !
म्हे थनै वरज्यो, लिया वाचा,
मिलण रै, नेह रै पैले दिनां !
अब असभव है जुड़ावो साथ थारै
म्हे वदळ मारग, खळक जाऊं विपिन-कांनन !
छुद्र धरती जोग है थू
छुद्र है घणियाप थारो नारियां माथै,
सकळ जळ, काळ माथै
अर भविस्यत रा अगम विकराळ माथै

त्यागती राजा थनै
म्हे पूत राखूला निसाणी रूप में म्हारै कनै
पाळूला मिनख रो वीज !
फाटी देह देतां जलम, झेली पीड
म्हारा अंस नै म्हे ई उछेरूंला !

तरुण वधतो गयो ज्यूं फूटी रूंआळी
मूछ, डाढ़ी, गाल, होठां अर छाती
अंग में चढगी परत स्रम सीकरां री
लूणिया ही आव, लाली नैण डोरां
गठीलै आकार भुज, मजबूत पुणचा
सीस माथै केस लट वांकी
घणी बांकी नरां री चाल अचपळ !

सातनूं भंवतो नदी रै तीर हृद बेचैन
जाणै सोधतो खोई जवांनी
नित रळकता नीर मे !
मरम विंधियोड़ो,
घणो ई छीजतो,
निरमद होया गजराज ज्यूं !

हालता अणचेत सपनां में चरण ज्यूं
वो विजोगी दरद गंगा रो उठायां ।

देख सर संधाण करता देव जोध जवांन नै
अर करतां परस गंगा रै अनंगां
होठ, छाती, गाल, केसां, पेट, कड़ियां
पिंडळियां, चरणां, नखां रो
समझ्यो ओ वीर म्हारै वंस रो है
कुण करै दूजो परस
इण हेत सूं म्हारी प्रिया रो !

कैयो गंगा नै विनत लोचण
तज्योड़ो, हारियोड़ो सांतनू जा रूबरू
माफ कर देवी ढ़िठाई,
माफ कर भूलां
म्हनैं थारी दया रो दे भरोसो
हेत रो जाचक
थनै लेवण होयो हाजर
खमा कर
चाल म्हारै साथ थारै सासरै !

कीं नहीं तो अेवजी में सूंप म्हारो पूत
म्हारी संपदा रो असल भोगणहार,
म्हारै वंस री अवतस
जुग नियमां प्रमांणै !
घणो निवळो बापड़ो है मरद
रुच रुच करै रंजण
भोगै भोग
अर संभोग कर, जद फेर पसवाड़ो
विसर दुनिया, अजांण्यो ऊंघ जावै,
मां गरभ में बीज पाळै तीन सौ दिन
सींच लोही सूं घड़ै आकार
खुद रो मांस दैवै
पीड़ भोगै

पण करै परिणांम रो धणियाप सगळा मरद
पळै भरम, बेटा सू वधैला वंस
झगड़ो अंस रो अर वंस रो है !
क्यूकै मरदां रै रच्योड़ो अेक निबळ समाज
धन, परिवार, सत्ता राज री
है छळ इसो ई !

मां दियो है छोड़ इणरा बाप नै पण
जनम तो गंगा दियो, गंगा चुंधायो
पाळियो गंगा जतन सू
याद राखो
पूत गंगा रो सदा गांगेय रै ई नांम सूं
रथ धज ऊचायां,
ओळखीजैला पुजीजैला जगत में

बाप रा व्याव में बेटो विनायक

भेद री आ बात म्है थांनै बताऊं—
अेक सौरम चांद में मझरात आवै,
अर उण सूं घणी तीखी
अेक सौरम सात किरणां में लियां सूरज तपै !
बीजळी तो पूंजळी होवै सौरम री !
अेक सौरम होवै जवांनी में चढ्या चंदण वनां री
फूल री छिण च्यार सौरम
घणी न्यारी होवै नदी, जळपांत री
सौरम समद सू !

वस इणी गत
जिकी सौरम होवै कंवारी देह री
ओळखै, परखै संध्योडा प्रांण
कांमी लोक में तो गंध ई आकार धर लै !

सांतनू चकरायग्यो इण गंध रा आवेग सूं
चेतना घिरगी असूंधी अेक सौरभ रै समद !
बिना होड़ै, बिना आगळ,
वो खिचोडचो ई खिचोडचो
मझ्झ पींदै पूगियां दरसण किया जद
अेक सोनल देह रा गंगा किनारै
ज्यूं रमण मुक्ताहळां–
जळपरी कोई बिछड़गी होवै झूलरा सूं !

कुण खडी परतख धरा रै केन्द्र में
थूं मानवी है, दानवी लीला
के कोई देव कन्या
भूतणी है संखणी है ?
सांच है कै फगत सपनो ?
भूतणी ना संखणी ना देवकन्या,
दानवी लीला न म्है सपनो अधूरी कामना रो
धीवड़ी म्है झूपड़ी रा नाथ धीवर री
नाम म्हारो सतवती है
संख सीपी और सफरां रो सरळ संसार म्हारो !
नैण में प्रस्ताव ले पूगो धणी उण झूंपड़ा में,
काढ़ ओळख,
हाथ मांग्यो सतवती रो
कांम रो आंधी चढयोड़ो !

कीर बोल्यो—
बापजी बेटी अब्याही
घरां तो राजेसरां रै ई न सोभै !
भाग म्हारा,
खुद धणी इण राज रा, जे मांग करली सतवती री
ले पधारो !
पण सुणी म्है
अेक है युवराज पैली भामणी सूं ।
आपरै सुरगां गयां पाधां बंधैला सीस उणरै,

राज ई वो ई करैला,
अर जाया सतवती रा
जाळ नदियां में बिछा सफरा उडीकत
मारता झख
समद में सीयां मरैला !
राज रा जे धणी वांनै आप मानो
वंस रो दो गरब
अर स्वामी वणावो संपदा रो
तो अरथ है भोग रो इण बाळका सूं
न्याव होवै संतान रो
परणेत रो होवै धरम पावन !
वात अखरी पण खरी ही
आय ऊभो फेर फेर सवाल वो ई
म्है लियायो देवव्रत गांगोत नै
इण राज सारू, भोग संपद रो करण नै
वंस रो अधिकार दे
म्हैं खोस लायो अंस मां रो दिखा पौरुस
सूप चुकियो वेल, रीत परंपरा री !

आज नट कोनी सकूं हक पूत रो म्हैं
हर नूवी परणी जलम देवै सपूतां नै
अगर मांगै धरा, धन, राज रो धणियाप आखो
जलम रै इतियास रो मुख मोड़ दै कुण
पूत जेठो तो सदा जेठो रैवैला

नयण नीचा कर, झुका माथो
थक्या पग म्हैल राजा वावड़्यो !
अन्न खावै ई नी, भावै नीं ।
आंख लागी हाय कैंड़ी—
रात भर आ आंख लागै ई नीं
मन ओपरो, तन छीज कांटा सो होयो
युवराज बूझी दसा,
वो कारण कढायो—

अर खुद पूछ्यां विना ई बाप नै
सतवती रै झूपड़ै जा चरण परस्या

प्रगट बोल्यो—
मां, मना संकोच छोडो
पूत थारा ई करैला राज, म्हैं दू वचन सांचा
क्यू कै म्है जांमण विहूणो हूं अधूरो
संपदा रो मेल खेलै बाप
पण मायड़ विना
आ आहुती कोनी म्हनै लागै
अरे ओ ग्रास ई म्हारो नी है
फेर ई धीजो नी होवै
सोचता होवो पूत म्हारा राड़ करसी
तो उठा ओ भुज करूं म्है आ प्रतिग्या
सुणो देवी देवता इण वस रा
धरती, अगन, जळ, चांद, सूरज
म्है जलम भर
हां जलम भर, बस कंवारो ई रहूंला

मुगध माई मां निहाळची बाळका नै
थूं सभाग्यो है घणो गांगेय
थारै दोय मांवां !
दोय नैणां बीच में थूं तिलक जैड़ो
थूं अजेय
अछेह होवैला जीव थारो
थूं जिको छोड्यो सकळ अधिकार कुळ रो
अेकलो थूं ई बचावै वंस
कुळ रिच्छा करैला !

देवता फूला बधायो
सांतनू सरमावतो सो पूत सूं टीको कढायो
पण अणूतो अेक वणाव वणतो रुक न पायो—

आ प्रतिग्या घणी भीखम
त्याग रो उन्माद है ओ
भीस्म पड़ग्यो नांम इणरै कारणै
पण केस होयग्या सेत्त अणछक सीस रा
धुंवा ज्यूं उडगी जवानी
होयग्या गांगेय वूढा
वाप करता घणा वूढा
अर वूढ़ा ई रैया जीया जठा लग !

प्रीत रो पराछीत

सतवती रै सांतनूं सूं दोय जाया पूत
पण वधियां विना ई अेक—
चितरांगद
कठै ई काम आयो राड़ में
गधख अरि सूं
दूसरो हो विचित वीरज—
व्याव री चिंता हुई डीलां लियां, जिणरी
वड़ा भाई वहादुर, राजकरता, गंगसुत नै

सुणियो कठै ई राज कासीराज
रचियो है स्वयंवर
अपछरा सी आपरी तीनूं कंवारी धीवड़्यां रो
नाम अंवा, अंविका, अंवालिका हा

पूगग्या गांगेय ई उण रूप-रण में
सांतनूं रा भंवर सारू
वीनणी नै जीत उण सजिया स्वयंवर में
दिखावण कळा सर-संधाण री

घेर तीनूं राज कन्यावां
उठा, रथ घाल, चाल्या हस्तिनापुर
जीत रण गांगेय, पौरुस री अथक जैकार सुणता !

अेक राजा, नाम हो सौवाळगढ रो साल्व
फिर्‌यो आडो,
अरज की—
म्है करूं हूं प्रीत इण अंवा कुमारी सू
म्हनै आ सूप दो वावा
भलां ई पूछलो
आ ई करै है प्रीत म्हासू
जे स्वयंवर होवतो निरविघन
आ करती वरण म्हारो
म्हारा हेत रो तो मांन राखो

रीस में अंगार ज्यूं वळता
विजय मद गह्ळ मे गांगेय
करदी अणसुणी आ अरज
उणनै कूट, मरदन मांन रो कर
लेय आया हस्तिनापुर रायकंवरी

ब्याव रा फेरा फिरण लागा
करी पाछी अरज अंवा
करूं म्हैं प्रीत म्हारा साल्व सूं पूरै मनां-म्यांना
म्हनैं परणाय दूजा नै
करो हो पाप; कै है पुन्न ओ नियमां प्रमांणै ?

थे पुजीजो हो जगत में नेम रा निरमाण करतां
थे घडो परिवार, वंस, समाज,
रचना थे कवीलां री करो
नारी नै वरत मरजी मुताबिक
थे वतावो—
प्रीत माथै वस किणी रो ?
प्रीत करणो अेक मन रो हक नीं क्यूं ?
पाप क्यूं है प्रीत करणो ?
म्है करूं हूं प्रीत विसवा वीस
जिणरो संग सोधू,
परस फूलू

दरसणां रींझूं,
मुगध मन बीजळी जैड़ो सैंचांनण
होवै सदा ओळू, उडीकां !
थे म्हनैं उण सूं छुडा
क्यूं बांध दो हो अेक अणजाण्या मरद सूं ?

खातरी कीकर होवै थांनै
कै म्हैं सेजां रमूंला खुलै प्रांणां
हर करूंला अंगदानां में नी म्हारै प्रण री ?
याद कोनी करूंला म्हैं अवस म्हारा मीत प्रेमी री ?

बात जंचगी कीं मगज में देवव्रत रै
खोल कांमण डोरडा, गठ जोड़णी
अर बरी, मोळी
भेज दी वो साल्व राजा रै कनै
अंबा कंवारी झूरती नै
ढोल बाजा, मांन आदर सूं, सजा रथ-पालकी

साल्व नटग्यो–
माजनो म्हारो गंवा, म्हैं होयो हतवीरज
जिकी रै कारणै, उणनै वरूं ?
हाथ पकड़चो हरण करग्यो,
अेक वो ई वर, कंवारी रो होवै
माफ कर अंबा म्हनैं तो माफ कर !

बावड़ी पूठी नूवैं बीहार सूं आहत
समरपित फेर होवण नै हरणकरता कनै
पण विचितवीरज न थांमी
कह्यो थारो मन कठै ई और है
थू और री है–जा अठा सूं !

बाप रो घर छूट्यो
प्रेमी न राखी
परणतां वर बींद नै पेली नटी बा

फेर वो नटग्यो
हरणकरता खण लियोड़ो विरमचारी रो !
घणी आहत, घणी ही अेकली अबा
घणा अपमान री दाभी !
रूळचोड़ी अेक पाळा सूं
खिलाड़ी रै पगां ठुकरीजियोड़ी दूसरे पाळै
कोई फूलां दड़ी ज्यू !

रीस अबा री नियोजित ही फगत गांगेय माथै
फूंक सूं ज्यूं नाळ में दे झाळ
सोनार गळावै लाल गेरू चुपड़ियोड़ा स्वरण नै !

निकळगी अंबा मुलक में
राजवंसां नै घणी उकसावती
अन्याव री देती दुहाई
रीस में खुद होम री ज्यूं झाळ परझळती !
करै कुण जुध पण गांगेय जैड़ा अनड़ सुभटा सू
गमावै राज कुण
इण अेक छोरी रा पखा में ऊभ
खुद री कुण गमावै लाज
डरतो भीस्म सू
आखो भुजावळ जीवतो समुदाय औघड़ !

अेक दिन चढगी हिंवाळा तप करण नै
रीस रै फण री बिखम फुणकार
रा विस सूं डस्योड़ी
बैर सूं निबळी
कठण तप री हुतासण में पिघळती !
साधना सूं रीझग्या संकर महेसर
कह्यो-कन्या !
थूं अवस पूरो करैला बैर
पण इण जलम में नी
जलम तो दूजो थनै लेणो पड़ैला !

सुण विधाता रै लिख्योड़ा लेख
वा क्यूं देर करती
वैंठगी काठां, मनोवळ सूं जगा अगनी
उणी छिण भसम होयगी
प्रीत रो इण भात वा करती पराछीत
उण पुराणा फिनिख पांखी ज्यूं
जलम लेवण दुबारा, राख वणगी ।

फूलां मरां तीरां मरां कोनी

तो सुणो अरजण, जुधिस्ठर
क्रिस्ण अर सगळा समरथां !
जीवतां म्हारै, जठा लग म्है न हारूं
जीत कोई जुध ई कोनी सकियो
कोनी सकैला !
म्है अगर हथियार धर दूं कालै रण में
थे करो आहत भलांई मार न्हाखो
जुध थांरै पख मुड़ै
थे विजय रा भागी वणोला !

सस्त्र म्है कोनी उठाऊं
सांमनै जे जुध मे आवै सिखंडी
ओ सिखंडी पुरुस कोनी
अेक नारी है अभागी
इण जलम री, गत जलम री
अर पूरव जलम री, फगत नारी !

हेत है म्हारो हिया में नारियां सूं
म्है न आकरसण नियम सू छिटकियोड़ो
परस करतां पिंड कंवळा
रोम म्हारो झबझबावै
नाड़ियां तणती म्हन परवस वणावै !

म्है अधूरो मां विना
तो हूं अपूरण अरध-जोड़ायत विना
बेटी विना, बैनां विना
अर प्रीत करती प्रेमिका रै मन विना
म्हैं टूटियोड़ो हूं
किणी खंडत होयोड़ी देव प्रतिमा ज्यू
अपूज्या देवरा में !

हेत हो म्हारो सिखंडी सूं जलम रा आंतरां में
आ, म्हनै छिटकाय
दूजां री बणी सहभागिणी
जद अेक गण रा लोग म्हांनै घेर
लेग्या अगन, गायां
अर धारण गरभ करणारी लुगाया !

म्हैं हरण पाछो कियो
जद आ बणी अंबा
जलम ले राज कासीराज कन्या !
यू बदळो चुकायो
हाथ पकड़्यो म्हैं हरण करतो
निभातो हाथ रो म्है हेत
पण करली प्रतिग्या घणी पैलां
म्है कंवारो जलम भर जीवण जिवण री !

आ घणी है मानवाळी, परम मांनेतण,
मरद सू रुसियोड़ी,
वैर काढण तप कियो
अर जद मिल्यो वरदांन
दूजा जलम में संहार करसी बेरियां रो
आ चिता चढ भसम बणगी !

मां थारी गोद निवाई अे

मा । गरभ थारै कुडाळी मार सोवै
ज्यू निवाया पथरणा में !
गोद थारी होवै निवाई
जठै अचपळ हाथ पग हातै मुळकता !
देख, मरती वगत कैड़ी वापरै ठारी,
मरण री तळखणा पूग्यो मिनख
चित पड़ै, सीधो !
आंख में सून्याड़ असमांनी
निजर असमांन ई असमांन उणनै लील जावै !
जलम सू इधको अवस होवै
मरण में हर जीव
वो मारग न जांणै, भूल जावै !

भीस्म ई चित आयग्या है अणगिणत तीरां !
छिदयोड़ी देह में
ताजा हरया घावां खिलै है
पीड़ रा रज पुसव, धारण कर नूवा आकार
मारै ठोकरां !
आज गुणसठ दिन हाया रणखेत पड़ियां
आंखियां मिचगी
पलक भारी होई मण-मण
भवा नीचै लटकगी !
बोलणो ई बंद होयग्यो !
चेतना फिर फिर घिरै
पण घणकरो संसार अंधारो लखावै !
छीजता तन मे सळायां ज्यू पुराणा हाडका
अब निजर आवै !
सांस री गत घणी आंची
देह में मावै नी, बस घूम आवै !

भीस्म खोली आंख
अर संकेत सू बूझ्यो–कठै हूं !
लोग वारै दरसणा आया कह्यो ऊंचै सुरां
वै आयग्या सूरज मकर में
उत्तरायण
हे महाभागी हुकम दो !

भीस्म काढी जीभ
धीरै-सी सबद 'पाणी' उचारचो
फेर अरजण कर पराक्रम तीर धरती में पिरोयो
नीर गंगा री परम निरमळ
उछळ आवेग सूं ऊंचो
अखूटी धार रा टोपा वण्यो
गागेय रो मुंडो भिजोयो !

भीस्म नै लाग्यो
कै उणरी वच्छळा मा
घणै कोडां
संख-छाती सू टपकतो
देव चरणाम्रत सरीखो दूध पायो !

मां ! जगत में हेत थारो पारदरसी
पीड़ थारी अकथ,
थारो हरख ई अणछेह
थारै गरभ में धारण करै सै देह सुगनी
थनै पी पी पळै
चिंता टावरां री कर घणी थू हार जावै
रोग अर भय-भव मिटावण
टोटका थारा परम विग्यांन
गोरै गाल थूं काजळ लगावै !

टावरां रो रमण ई थारी रमत
थूं पकड़ पुणचो प्रथम पग ऊभो करै
भासा सिखावै !

प्रीत सू संची जुगां सूं, पीढियां सूं
राळ देवै है भविस्यत रै अलख प्राणां
गुणां रा बीज देवै !
थूं सदा रखवाळती थाती
बणै अपरूप दुरगा, चंडिका अर भगवती,
बाळका विलसै,
पळै सै गोद में थारै निवाई !

यूं कियो गांगेय सिमरण मात सत्ता रो
प्रभा वधगी
उजाळो देह सू निसरै
करै जैकार बचियोड़ो जगत बंधियो धरा सूं
जोत अविकारी प्रखर रवि ओप सूं
छिण अेक में जा जोत मिलगी !
फूल बरस्या, सख बाज्या
ढोल रै ढळतै धमकै
प्राण रै प्रस्थान रो उच्छब मनायो !

जद चित्ता नै देह रो सिणगार सूंप्यो
अेक जणा रा प्राण रो कुरळाट फूट्यो
मोड़ मुडो जद सिखंडी आंख पूंछी
रोक सिसकी,
हाथ में ले मूठियो कोई सवागण तोड़ न्हाक्यो
अर माथो निंवा
ले नारेळ हाथां
चालतो वो हसगत बळती चिता में
सत करण नै, लीण होयग्यो !

कै अचांणक दीखियो बधतो दिगंतां
अेक मानव रूप
अणघड़, चाल खाथो,
भुज उठायां रोकतो अर नाद करतो
आ रैयो हो
साथ आंधी उमड़ती

अर साव लारै खळळ खळ कर भगवती गंगा
उठावण गोद में छावो
रळकती आ रैई है !
धधकती धू धू चिता रै मार छांटो
मंद कर दी
इण कुटम रो जनक वेदव्यास हो वो !

अर गंगा, मात गंगा, मावड़ी गंगा
पतित पावन, तमस हरणी
विमोचन पाप अर भव-ताप करणी,
आपरा जाया अमर गांगेय नै
खांदोळियै पुचकार,
थेपड़ती, करा पंपोळती
टुरगी उठा सूं, नीर गति सू
करण नै बेटो विसरजित महोदध में । □



'इण तकनीकी सम्यता रा जिका नतीजा निकळै उणमें मिनख री चिंत्या मुख्य है। बारलै जीवण रा दबावां रै कारण अर वेगवान जीवण केई बेमारियां नै जलम देवै। लोग निरणै कोनी कर सकै अर पसोपेस में पड़्या रैवै। इण तकनीकी समाज में व्यक्तित्व रो नुकसाण होवै। छेवट मसीनां रो असर इतो वध जावै कै मिनख री कोई कीमत कोनी रैवै। मिनख, समाज सूं छिट्कयोड़ो अर अलायदो रैवै।'

आगत-अणागत

1986

• अगवाणी • ओळख • उतारो • मौत • जांमण नै....
• जांमण नै • धीयां नै • घर • कचरा री कांण
• भूगोल रा बंद

अगवाणी

आगा हो जावो बा'सा
अणसम मारग में क्यूं बैठा हो !
दीसै कोनी, सूरज रो आवै है रथ अठीनै !
चिगदीज जावोला;
कित्ता वेग सू आवै है, देखो देखो,
इण रा आवेगा सू आगली पाखती ऊठणवाळी
आंधी अर बथूळिया में उड़ग्या तो
थै थांरी जांणो;
थोड़ी वळा फेर टिकणो–होवै
तो उण धुड़ता ढूढा री भीतां लारै
छींया में बैठ जावो बा'सा,
सूरज रो वेगवान रथ अठीनै इज आवै है ।

वो देखो इंगरेजी बोलतो थांरो पड़पोतो
रीस आवै जद हंसण लाग जावै;
वारै बैठा उडीकतां, उणनै सरम कोनी आवै,
जद ना कैवणो होवै, वो हां बोल जावै ।

अर कैड़ो तो बदळाव आयो–
कै टाबर टाबर कोनी रह्या;
टाबरां ज्यूं रमै है मोट्यार;
गरीब गुरवा ज्यूं कारी लाग्योड़ा गाभा पैरै रईस,
धरम गुरु घड़ी घड़ी परणीजै,
अर जणा जणा कन सोवती धीवड़ियां गरभीजै कोनी !

तो अेकांनी-सिरक जावो सचवोला बा'सा,
चोरी कुण कोनी करै ?
कुण कोनी-छिपावै आपरा करम ?

छळ कपट रो ई है ओ महाभारत;
थांनै यूं ई कोनी दीसै वा'सा
मिनख रा वदळता मन री कालायां
थांनै कीकर सूझै !

वो आवै है सूरज रो सतरंगो रथ,
नया नया औजार अर हथियार
उठा लिया है मिनख !
नया नया नसा-पता,
नागा रैवण नै पैरियोड़ा नया नया गाभा !

वगत री तो मिटगी सगळी ओळखांण
रात होयग्या दिन,
अर दिन होयगी रातां;
थांनै उठाय अेक कांनी धरण नै
कोनी रुकेला मिनखां रा पवनवेगी यान !

हां वदळग्या'सै कीं वदळग्या
वगत, अकास, अरथ, धरम, प्रीत, कांम,
ओ धमीड़ो थे कोनी सै सकोला वा'सा
आगा हो जावो;
सिरक जावो अेक कानी,
उठी छीयां में जावो परा,
आवै है हित्यारा सूरज रो निपग्गो रथ !
आवै है !

ओळख

अेक जमानो हो,
जद लोगां नै लखावतो कै वै मिनख है
अबै की लखावै कोनी !

अबै फूटरा कोनी लागै फूटरा,
बिडरूप भिरोखां सूं झांकण लागग्यो रूप-सरुप,
अबै तो पीड़ ई कोनी लखावै,
दोरो ई सोरो लागै

आगै लागतो, आपां जिनस कोनी हां;
कोनी हां जिनावर सींग-पूंछ वाळा,
आपां मिनख हां!

जमानो केई सबक सिखायग्यो
लुगायां नै लेवता बेचता–
अर किराया माथै उठावता लोग,
ना खुद लागै मिनख,
ना वै लुगायां लागै नारी–रतन!
गुलाम अर गरीब कमतरिया ई,
जुड़ाव सूं छिटक्योड़ा लागै जिनस जैड़ा,
अर रोजीना रो इकसार जीवण जीवता
नींद, जीमण अर भोग-भजन करता
आपां सगळा ई होयग्या हां जिनावर–
आदम जिनावर!

अबै ना आपणै कनै हरख-पीड़ है,
ना भासा,
आपां नै लखावै ई कोनी कै आपां हां!

उतारो

छिण अेक धरती नै थामो–
थामो म्हनैं उतरणो है

सूरज रा सात्यूं घुड़ला तो लारै रैयग्या,
हांफण लागगी पूंन अकासां लड़थड़ती,

वेग रूपायत होयग्यो;
अर गंध जमगी है वादळां ज्यूं
म्हैं जिको फूल सूंघतो
वो तो सौ जोजन लारै रैयग्यो !
हांफै है सगळा ग्रह नखत, मंगळ, बुध, गुरु,
म्हनैं अठै कांई करणो है !
छिण अेक थांमो धरती नैं, म्हनैं उतरणो है ।

सूरज री अेक किरण नैं अठै आवतां
जित्ता किरोड़ वरस लागै,
सबद नैं उण अगन रा गोळा सूं चटक
म्हारै कांनां लग आवतां
लागै उण सूं वेसी वरस !
पछै थारी इण धरती नैं–
अेक पूरी परकमा करतां
क्यूं कोनी लागै वगत रो थांण !

देखो, म्हारै लिलाड़ पसीनो पळक रह्यो है,
देखो, फूलगी है सांस म्हारी;
कांई म्हनै वगत री चालणी सूं छणणो है !
छिण अेक थांमो धरती नैं, म्हनैं उतरणो है !

अेक पल तो खावण दो विसाई,
सोवण दो म्हनैं मोड़ो दिन ऊगां तांई,

वांइटा काढण दो म्हारै पगां रा;
लारली-आगली सोई तो लेवण दो,
आंम्है-सांम्हे होवण दो म्हनै म्हारै,
वस ओ ई जीवणो है कांई ?
ओ तो मरणो है !
छिण अेक थांमो धरती नैं म्हनैं उतरणो है ।

मौत

बैठो हूं म्है बीसवां सईका रै उतराध
(फगत पनरै बरस बाकी है)
जलम लेवता अणगिण जीवां रै मज्झ
म्हनै ई अपरोखी लागै चिंतणा मौत री !

पण भिभक आकार धारण करै
म्हारै अवचेतन में रगत री अेक नाडी
जिणमे तिरता अलेखां मरण-कोडियाळ
उण इकथंभिया म्हैल रै कंगूरां कांनी
जिण माथै टंगियोड़ो अेक लोही भरतो नरमुंड
जिणरा डोढ़ा झिरोखां सूं छणती
खळखळ हंसी;
अर गोखड़ा में तीरां री सेजां ओझकै
सैलां सू बिंधियोड़ा
पळकती करवाळां रै झटकै पड़िया कवंध
क्रूस माथै लटकता,
अरोगता केसर रा प्याला
अंठता वदन मुगत होवण री पीड़ सूं !

कविता रो छांटो पडतां ई
पाछो बैठतो रगत रो उफाण,
अर गरभ में भेळो होयोड़ो भ्रूण
रूप धारण करतो कुंडळाकार !

वसंतायोडा उद्दीपन वन में
फूलां सूं लड़ाझूम बेलडियां बीच
पांच सपूतां रो बाप
काम रा मरण बिंदु री चेतना में
अेकाकार
जीवण सिरजण री साधना में
अणावरत माद्री रा भूधर कुचां नै

आपरी मूठी में भींच,
उणरा निवाया होठां मे गडाया गयो दांत
अर धोवतो आपरी तणियोडी नाड़ी सूं
किरोड़ां जीवाणु स्वागत करता गरभ में
अेकाअेक पड़ग्यो निस्पंद !
निस्पंद होयग्यो हिरणी रो सराप !

रगत री नाडी मे
कामासणां लीण लाख लाख जुगल
छिटक छिटक ढंक लिया भोजपत्तर सूं
आपरा झब झब करता अंग
गिनोरिया अर सिफलिस री छूत सू डरियोडा
मरण रा डर सूं घायल मरियोड़ा
अणभोग्या अनुभव री मायावी पीड़
अेक मौत !

कैंसर वार्ड में
सूरज भगवान रै उतरायण पूगण नै उडीकतो
पीड़ सूं छीजतो अेक भरपूर जोधार,
विंधियोड़ी तीरां सू !
अंबा नै अेक वार, फगत अेक वार
निजर रा फोटू-प्लेट माथै उतार
अंधारा में विलम जावण नै उंतावळो,
सांम्है ऊभा सिखंडी सूं ई संतोस धार
जिणरो धौळो माथो लटकग्यो
जीवता महारथियां रै रूवरू !
अेक बेकाबू रोग
अेक्यूपंचर, अपरेसन, रीसर्च, रीसर्च !

अेनरजी बराबर मास गुणा वेलोसिटी वरग !
अणु रा गरभ में जलमें
वा रसायनिक ऊरजा
जिकां में विसरजण होवै सगळा जीवण !

हिरोसिमा अर नागासाकी रा नगर
धू धू बळै इण ताप सू
अर दाझै लाखां पिंड चीसां मारता !
अेक धुवा रा बादळ
अर धमाका समचै अलोप होवता
हज्जारां अबोध, निरदोस, जनपद
चेतनावां निस्पाप !

माथो पकड़ बैठग्या चित्रगुप्त जी
लाख लाख जीवां रो लेखो
पाप पुन्न री खतावणी
मिजमांनी लाख लाख पांवणां री
पाछा सिरजण री चिंता !
नोबल प्राइज
अेनरजी बराबर मास गुणा वेलोसिटी वरग !

तणाव रा आखर घोखतो
दफ्तर सूं घरां बावड़तो
अेक अैलकार भिड़ग्यो समान लदिया ट्रक सूं !
निकळ आई पेट बारै
धोळी गुलाबी आंतड़ियां
अेक धमाका साथै बारै आयग्या
माथा रा कपासिया
थरथरायो अेक हाड मांस रो वदन
पांणी, पाणी, पांणी !

सोना री अैंठवाड़ी बतीसी धोय
दान करण नै
घोखतो ब्रम्हास्त्र चलावण री कळा
परसरामजी रै सराप !
चकरिया रै ऊपर घूमती
माछळी री आख रो संधाण
नीचै तेल रा कढाव में पडछाया देख !

कंवारी कन्या सूं जायोड़ो
मां, म्हनै अेक बाप तो दियो होवतो
बाप विना वहू कठै ?
रिच्छा रा कवच-कुडळ कालै ई उतरग्या !
मुडा माथै मारली अेक डगळ री
सोना री वत्तीसी धोवण नै
पांणी, पांणी !

तीन वरस होयग्या बादळां नै अठीनै गाज्या
सूखगी-धरती रै नीचै री अंतरधारा
दो मील पूरब कांनी वधै रेगिस्तान
सालो साल !
आंधी, वथूळिया अर रेत रा दरियाव
भरयां जावै सामरथ सतावांन
रासन में चळू चळू पांणी
पीवो, धोवो, न्हावो, करो कुरला !

तड़ाछ खाय पड़ग्यो टोगड़ो
तणगी च्यारू टांगां
बारै लटकती जीभ माथै वेकळू !
दिमाग सब सूं पैली मरया करै
पछै मरै दिल
अर आंख्यां खासी ताळ मरयां पछै ई जीवै
ट्रांसप्लांट दिल रो
आंख रो दान संभव है इणी कारण !
हाल थूक में तरळाई है
चालो माळवै !

माळवै किसा मिनख कोनी मरै !
आटा-पाटां वैवती अेक नदी में
रूंखां माथै टिरियोड़ा लोग
देखता रह्या आंख्यां सांम्हीं
धार में गुड़कता आपरा कुटम नै

डूबता, उतरावता, वदन
नागा, फूल्योड़ा, विडरूप !

कठा सू आवै रेळो अचाणचक
मरण रो,
वोळाय जावै अंवेरियोड़ी संपद,
झूपड़ा !
अर विखेर जावै घरकोल्या !

वो उड़तो अेक विमाण पड़्यो संमदर में
तीन सौ पचास अमीर उमरावां
अर परियां जैड़ी फूटरी
परिचारिकावां नै आपरा गरभ में लियां।
हाल सोधै है लोग
उण विमाण रो कचरो
जातरिया रो सामान ?

जामण नै....

छोरी सू लुगाई वणती वगत रो वदळाव
घणी पीड़ उपजावै मां
अर थू म्हारी कोई मदद कोनी करै ?

केई तो मिथक, केई तो रहस्य
जुड़योड़ा होवै इण वदळाव सूं ?
सहेल्यां ई सांच कोनी वोलै
अेक वरजणा रो पसराव होवै म्हारै च्यारुंमेर
अेक गुब्वो, अेक अनुमान में जीवां
म्है सगळी धीवड़ियां ?

देही रा आपे आप होवता करम
जिकां माथै जोर कोनी म्हारो

क्यूं देवै म्हांनै अणूंती सरम,
क्यूं करै म्हांरो दरपदमण, अपमान ?

क्यूं म्हांनै अपरस बणावै लोग
क्यूं म्हांनै सूग आवै खुद माथै
क्यूं म्हांनै पाप रो बोध करावै
ओ देही रो धरम
क्यूं ठेरावै म्हांनै कसूरवार
क्यूं म्हांनै चुप रैवणो पड़ै ?

थूं खुद भोगियोड़ी, म्हारी मदद कोनी करै मां ?

जांमण नै

थारा सूं बिछड़ण रो भौ
म्हनै थारा सूं जोड़ दी मां ?
भाई तो जलम सूं ई आपरै पगां होवै
मोटा होयां लाग जावै आपरै बाप रा बौपार बिणज में
संसार बसावै बडेरां ज्यूं
अर सुख दुख झेलता गुजर जावै इण मेळा सूं ?

पण घणी डरती म्हे
लारै आंचळ रो छाव छोडती,
घणी अचपळ होय जावती
जद थनै कोनी-देखती म्हारै कनै।

थनै म्हारा डील में उतारण नै ई तो
म्हे रमती ढूलियां सूं
थेपड़ती, खवाड़ती, सिणगारती, लाड करती।
थारी जूंण जीवण नै ई तो
म्हे रसोई करती, घर बणावती, टाबर राखती !
म्हनैं घणो डर लागतो थारा सूं बिछड़तां !

सासरै गयां ई ओ संको कोनी छोड़ै म्हारो पल्लो
घिरियोड़ी नर रा भुजपास में
आंख मूंद इणी अभरोसा मे चिमक चिमक जाऊं
कठै ई म्हनै बिछड़णो तो कोनी पड़ैला ।
कठै ई म्हैं विलग तो कोनी हो जाऊं ।

धीयां नै ....

हर वार म्है ई म्हैं हारूं वेटी, म्हैं ई म्है हारुं ।

थनै जाई जद सुणिया मोसा म्है
जाणै थारो वेटी होवणो म्हारो कसूर है ।

थनै बेटां साथै उछेरी
तो जणो जणो टोकी म्हनै
म्हारै पिड रा ई दो खंड,
सोचो तो कुण वत्तो कुण ओछो ।
तो ई धोवा धोवा ओळमा घालीज्या म्हारै पल्लै ।

थनै टोकी, बरजी समाज रै संकेतां
पण मेहणा सुण्या म्है ।
आगण में थारी बिगसती काया सूं डरती,
थू बारै जावती तो अपलक उडीकती म्है
अर छपर-पिलंग माथै थारै पौढ़ियां
रात्यूं चमक चमक पौरा दिया म्है ।

व्यावणसार होई
तो लोगां आरपार करदी आगळी म्हारै
नींद उड़गी म्हारी ।

परायै घर विदा कर

अवै म्है सुणूं थारै सासरा री सिकायतां
अर अबखायां थारै मन री ।

थारै कारण हारी समाज सूं
अर अवै हारगी थारा सूं
हर बार, म्है ई म्है हारूं बेटी, म्है ई म्है ।

घर

धरती सूं १४५४ हाथ ऊंचो ऊभो हूं म्है
सिकागो नगर में सीयर टावर री
११० वीं मजल माथै,
जठै इंतजाम है म्हारै रातवासा रो !
फगत बदळग्यो है अकास
अर म्हारी दीठ में उफांण लेवै
सात समंदर पार म्हारो घर
मकराणा मोहल्ला, जोधपुर में
खीर समद में संपिणी ज्यूं अळेटा खावतो !

[म्हां च्यारूं भायां नै बेचणो है ओ ढूढो,
लाख लाख रिपिया कोई ओछी रकम कोनी होवै]

अेकाअेक धारण कर लेवै
मानवी उणियारो, म्हारो घर,
चूना सू पुतियोड़ो, परेवा जैड़ो ऊजळो !
बाधतो म्हनै आपरी हेताळू भुजावां में
अर बंधतो म्हारी अणसीमा बावा में,
डुसका भरतो,
टप टप चवता आंसुवां में
पाछो लाध्यां गमियोड़ा टावर ज्यूं !

भाईसा ! ओ कोरो घर ई कोना
ओ म्हारी रातादेई मां है—मां !
जिणरी कूख मे जलम लियो म्हे
अेक अंधारा ओरा री टसकती मचली में,
(सूंठ अर अजवांण री सौरम
हाल भर जावै म्हारी सांस में)
जठै चौक में चित पड़ियो
म्है टुग टुग भाळचो असमांन !

नया घर में इण घर रो सामान !
भूगोल सूं बंधियोड़ी कोनी आ सभ्यता
मोह, कोनी कोई चीज सूं
अेक बार वापरियां
अकूरड़ी माथै फेक दै आपरी चीज वस्त

अै कोनी मानै सरग नरक
आतमा परमातमा
अणत काळ अर विपुला प्रिथमी ।

कचरा री कांण

औंर फेको अमीर उमरावां
पैक करण रा कागद

आज तो थांरो तिंवार है
रंग-विरंगा, फूल-फांटा छपियोड़ा
चीकणा कागदां सूं बांध बांध
लावोला अलेखां भेंटां
अर दिनूगां क्रिसमस रा रुंख हेठै बैठ
सांता क्लॉज रा थैला सूं काढोला
अेक दूजा रा उपहार
पछै फाड़ फाड़ फेंकोला पारसलां रा कागद

संसार रा साधनहीण देसां रा
लाखां किरोड़ां टावर रैयग्या अणपढ़
कागद कठै
अर है तो मूघा कित्ता ?
किताबां कठै ? कागद कठै ?

फैंको इणी भांत गाभा
दातण करण रा बुरस
हजामत रा पाछणा
मोटरां, घर वार,
फगत अेक वार काम में लियोड़ा सामान
म्हारी दुनिया नै दरकार है अै सगळी चीजां री

दवायां थोक वंध, भलां ई नुकसाण करती होवै
दवायां तो दवायां होवै
अर वै ई परदेसी ।
तो फैंको अमीर उमरावां
थांरी सभ्यता नै अहनाण रा कीं छांटा
फैंको फैंको ।

भूगोल रा बंद

अेक जूनी सभ्यता रा वारिस आपां
इण नतीजा माथै पूग्या
कै संसार असार है । अेक सराय है
अठै आपरो कीं कोनी
साथै कीं कोनी चालै
कांकरा कांकरा भेळा कर म्हैल चुणाया—
अर मूरख इणनै आपरो घर कैवै
ओ तो रैण बसेरो है–रैण बसेरो

पण जद ई मामूली सो दवाव आयो
आपां नटग्या आपणी जमीन देवण सूं
टावरां नै पालणै में पढ़ायो—
इला न देणी आपणी...
घर रा ढूंढा सारू कोट कचेड़ी चढ़िया
अर अेक टोडो कै चातरी ई कोनी दी
भायां नै

पण अवै जलम ले चुकी है
अेक नूवी सभ्यता
जिकी ई धरती नै आपरी कोनी मांनै
कोनी मांनै देस आपरा
सैर, गांव, सगळा बदळता चालै
सीवां सू आगै वधता चालै

आ सभ्यता वदळै मोटर हर दूजै वरस
हर तीजै वरस घर
अर आपरो गांव हर पांचवै वरस

घर वदळती वगत कोनी ले जावै।
आपरै साथै।

□

'म्हैं तो म्हारी गरज सूं आह्वान किया है – समता नै सुख-दुख बांटण सारू, काम नै संतान सारू, वेदना नै जागरण खातर, संभावना नैं गाढ सारू, रीस नै अन्याय रै सांम्हैं लड़ण सारू, लाज नै हेत सारू, पाप नै शुद्धि सारू.... ! म्है आं सगळां नै बुलाया है, अभ्यरथना करी है, काम मोळाया है अर कदेई-कदेई नतीजा सूं ओळखाण ई कराई है।'

आहूतियां

1986

• वन • संभावना • कल्पना • बाळपण • भरोसो • हरख
• पाप-बोध • त्याग • प्रेरणा • तिरस • संकोच • उपज
• खेम • गाड़ • ईसको • सस्तो • न्याव • आजादी
• प्रार्थना

वन

म्हे लियां वरमाळ ऊभी हूं स्वयंवर
थे पधारो सांवळा वन देवता रळियामणा

अै बिचारा पांख पंखेरू
करै जिण घर बसेरो-रातबासो
जीव कळझळ करै--
जीवै निपट बळ सूं
सांप, उल्लू, सिंह, हाथी, मिरगला री सरण
थे हरियळ धरा री कूख रा वरदांन
आवो सांवळा वन देवता

अचपळी नदियां रमै खोळै,
खळक्कै किलकता नीझर,
फळां, फूलां, हरी द्रोबां, रो कियां सिणगार,
गवरु, अखतजोबन,
थे पधारो म्हे उडीका वाट थांरी

काट थांरा रुंख
काटै जे मिनख नै
व्याध है वै
स्राप रिसियां रो जगावां
लोभ सूं हित्या करणियां पापियां नै
जग्य मे म्हे बांध लावां

थे जठै होवो मेघ घिर आवै छतर ज्यूं,
थे पवन रा दोस पी निरमळ बणावो,
आसरो दो आसरम नै
म्हे रसाळां सूं भरां खोळा

दमकता जुगनुवां रै, पागियां रै, हाल ओठै
भूलता मारग, भटकता रिंदरोही
मिनख मांदो है घणो ओ सांवळा
थे जड़ी बूटी जगमगाती औखदी संजीवणी ले
इण सदी रै प्रांण नैं पूरण वणावो
थे पधारो इण वरण मे देवता
वन देवता, वेगा पधारो ।

संभावना

निरासा रा उफणता समद मे पड़्यो हूं
डूबणो ई अेक मारग है
अर डूब ई रह्यो हूं
दुख रा इण विराट पारावार में
फगत थू अवतार ले
हाथ में इमीघट लियोड़ी
हे अपछरा संभावना
आव
म्है गुचळक्यां खावतो थनैं भाळूं
हेलो पाडूं—पाछो जीव जाऊं

इण गत म्हारा सगळा सुखां विलासां में
छिप्योड़ी अे मोहिणी संभावना
तिणकला जैड़ी, फगत अेक सांस
रूप जोबन सिणगारां माथै वैठा पोणा सांप
थूं म्हनें चेतावै
भरोसो देवै
ध्यावस देय सुवाणै
जोड़ै भावी री आंवळ नाळ सूं

आव म्हारै मन भुवन री लिछमी,
संभावना
म्हारै साथै रै ।

कल्पना

जाग वनड़ी कल्पना
आपां घड़ां, की सांच रा, कीं झूठ रा चितरांम
सपना मिनख री पूरण अपूरण वासना रा
घड़ां पाछो अणमणो इतियास
उणनै गासिया देवां अरथ रा, कारणां रा
फेर उणरा काळजा सूं काढ लावां
मोतियां जैड़ा नतीजा
सूपदयां रमता भविस्यत रै करां में !

अेक थारी कूख सूं सिरजण कियोड़ी
सांच होवै रचना, खरी होवै
खुद घटी घटना नीं सांची होवै सदा ई;

जाग वनड़ी कल्पना
थू जुग जुगां सू फगत जोड़ायत रही है
सांच री
थारै बिना जीवै अपूरण साच
थू तो मधुर पख है सांच अणघड़ रो !

अरे मत लाज म्हारी कल्पना
थू जाग वनड़ी जाग ।

बाळापण

वरसां री भीड़ में
म्हारी आंगळी पकड़चां पकड़यां चालतां
बाळापण
थूं कठै छूटग्यो लारै !

आव बगत री रेत में बणावां घरकोल्या
थारै मुंडा री निस्पाप मुळक नैं
दिनूंगां फूलां ज्यू धोवां
तारां झरती ओस सूं

इचरज करां
अर रग विरंगी पीपळयां रै लारै भागां
नीद में थनै कांई कैय जावै कुदरत
जे थूं मीठो मीठो मुळकण लाग जावै !

आव, म्हनै ई चालणो है थारा परीलोक में
पूछ, म्हैं थारै मन में ऊठता
लाखां सवालां रो करूं समाधांन
थूं थूं खुद ई जांण जावैला अलेखा जवाब
गिळगिचियां सूं रमतां
कै पांणी में छपछप फुदकतां, भींजतां !

अदभुत ही ओप थारै अंगां री
तो ई लाधै कोनी गमियां पछै
इण अंधरीज्योडा बजार में
म्हैं थनै हेला पाडूं
सायत पिछांण लै थूं म्हारो सुर
आव म्हारी आंगळी पकडयां चालता बाळापण ।
आव !

भरोसो

थूं होवै, तो अचींत्यो अदीठ ई सांचो
अर थूं कोनी होवै
तो परतख दीसतो सांच ई कूड़ो
भरोसो अलख कमाई है मिनख री

आव भरोसा !
म्हैं थारै ई भरोसै हूं !

थारी मूंजड़ी पकड़ म्है चढ जावां भाखर
कूद जावां अगन में
उडलां अंतरिच्छ में, तिरलां समंद में !
आधा इंच आगलो पहियो
अर आधा इंच लारलो पहियो
जमी माथै टिकायां
साइकिल चलावतो मिनख थारै पांण ई आगै वधै
आगै वधै सगळो ग्यांन विग्यांन थारै पांण

समाज रा संबंध कुण वणावै ?
अेक दूजा सूं जुड़ै लोग थारी रेसमी सांकळ सूं
थारै कारण सीता रैयगी रावण री मांद में
थनै पाछो बुलावण देवणी पड़ी अगन-परीछा ।

थूं अकथ ताकत है प्राणां री, भरोसा !

हरख

नींद खुलतां ई म्हनैं हरख होवै
जीवता रैवण रो, नूवै दिन रा दरसण करण रो
हरख नीरोग रैवण रो
हरख कमावण-खावण रो
हरख सिझ्या ताई थाकण रो, चोखी नींद सोवण रो

हरख लोगां सूं मिलण रो
समाज सूं जुड़ण रो
इण नदी अर महरांण री अेक छौळ वणण रो
सगळा मिनखां सूं प्रीत करण रो

हरख होवै बिरखा पांणी सूं
रूंखां, बेलां, फूलां, पौदां, हरी हरी घास सूं
तावड़ा सूं, चांदणी सूं,
वायरा सूं, आंधी-तूफांन सूं
रात रा अंधारा सूं, दिन रा चन्नाणा सूं
इण विराट सिरजणा री अंतरधारा
जलम, मरण, विगसाव सूं
अर इण नरतन री मूळ सत्ता रा दरसण सूं !

पण लाखां लाख लोग कोनी देख्यो थनै
कोनी रमातो थनै खोळा में ।
अेक वार वेरै प्रांणां में ई आवै
तो जीवण रा वरस दूंणा तिगणा वध जावै !

पाप-बोध

जाग बोध पाप रा !
आतमा नै बोध
जिणसूं पड़ै उणमें दाग काळा
रात दिन थू चूंठिया भर चेतना रै
डरै जिण सूं जुलम करतो जीव
झिझकै गुन्हा करतो !

आतमा सोरी घणी है इण जगत में
कुण सजा दै बावळी नै
सजा तो मन, देह झेलै न्याव री
अर पीड़ दूजा नै पुगावण रा करम री !

जाग सिग्या पाप री
थूं वेदना दै आतमा नै अर वचालै
आ सिड़ण लागी अबूझी

अेक ई उपचार है उद्धार रो
थूं जाग काळा बोध कोरी चेतना रा
पाप री ओळख करा दै आतमा नैं ।

त्याग

आव पूरण भोग, तापस त्याग

कर चुक्यां हां भोग छिण रो, अणत रो म्हैं
रूप रस रो, गंध रो,
मोहित निजर रो, परस, वांणी रो
रतन, धन, संपदा रो
पुरुस नारी रो
गगन, धरती, अगन रो, पवन रो,
इण उदध भर मेघ जळ रो
धापग्या हां
आव पूरण भोग, तापस त्याग
म्हांनै भोग सूं थू ई उवारै

क्यूं कै ज्यूं ज्यूं भोग भोग्या
भोग री बधती तिरस रै वारणै
थाकी उमर, थाक्यो बदन,
दो नैण दूखण लागग्या
पग बोझ ई कोनी उठावै
भोग तो परसाद रा परमाण जितरो अब न भावै

म्हैं समझग्या
भुगतणो ई भोग रो फळ होवै जगत में
त्याग रो आणंद भोगां सूं सवायो
त्याग ई है भोग साचो
आव पूरण भोग तापस त्याग ।

प्रेरणा

आव म्हारी प्रेरणा परणी-पताई ।

छूटतां ई हाथ हथलेवो
घरां आई महकती मेड़ियां में
घणी भोळी अर अबूझी,
जागती,
की सोधती, कीं समझती
थूं अरथ सू अणजांण,
डरियोड़ी, झिझकती ।
म्हैं निरखतो रूप निरमळ
जगत में वधग्यो सुरग री सीव तांई

आज म्हारा पथरणा में घोर खीचतो
अडोळी, धापियोड़ी,
यूं पसरगी खुद, म्हनै अब कुण जगावै ?
कुण मंगावै मांग मुकताहळ समंद सू
कुण तुडावैं फुणगियां टंकिया सितारा
कुण म्हनैं विड़दाय, म्हारो वळ वधावै

आज पाछी गरज पड़गी है म्हनै
अे प्रेरणा !
थू सेज म्हारी आव
थोड़ी झिझकती, सपना सजाती,
सोधती, भोळी, अबूझी

भर सवागण 'मांग में सिंदूर म्हारै
आव म्हारी प्रेरणा परणी-पताई ।

तिरस

जाग अणछक तिरस
थू भरिया समद सी
नैण, होठां, कंठ में,
तन-पोर में, नख-केस में, मन-प्रांण में
आ वैठ अणछक तिरस थू भरिया समद सी

थू लगा प्याऊ
कनक झारां अटूटी धार,
म्हारा प्रांण तिरपत होवै उठा लग कूढ़ियां जा
दरसणा सूं धापणो अधरम गिणीजै,
नैण सेजळ होय थारो रूप पीवै जुगजुगां सूं
होठ थारो मद परस सिकुडया न दाझ्या
कंठ मे ऊग्या न कांटा
रोम में रसभीड़ बोलै—
'और कूढ़ो, और पावो'
कुण होवै तिरपत चळू भर दरसणां सूं
अेक चिमटी परस सूं, कण हेत सूं

हाय जीवण है कितो व्यापक
अलेखां रूप रस में
और पल्लो बैंत भर रो खोळ भरवा नै
कठै मावै अणत आकास
नेतर दोय, काया पांच छ फुट,
अेक कोरो मन भटकतो

पण छक्योड़ा मिनख है अणगिण जगत में
जीवता ई जे मरघोड़ा ।
जाग उण में
जाग अणछक तिरस थूं भरिया समद सी !

संकोच

आव मन सकोच सब रै ।
मारतां कोई मिनख अणजांण नै,
अर चोरतां धन, दावतां धरती पराई,
पेट माथै मार लातां—
पटकता परण्या गरभ नै,
बैन सूं धंधो करातां अंग रो,
अर टाबरां नै कूटतां,
मारतां बिन बात कोई जीव नै
आव मन संकोच सब रै

मिनख है मूघो घणो
वै कैयग्या ग्यांनी
कै लख चौरासी भटकतां जूंण मिनखां री मिलै
थू रंग रा कर भेद
जातां रा, धरम रा, वरग रा
दोयण वणांतो, कर मनां संकोच

कर मनां संकोच
धन रै कारणै थारा वदळग्या
हेत रा व्यौहार
थूं छळकपट, चोरी, लाव-लालच में घिरीज्यो
मिनख रो दूवै पसीनो
सीव धरती री उकेरी,
देस म्हारो देस थारो कै भिड़ाई फौज
लाखां नै मराया
फगत थारी मूंछ अर तुरा किलंगी
अखत राखण

थूं मिनख रो कुण
वता थूं देस रो कुण
जद कुटम रो ई नहीं है ?
अै झुरै बूढ़ा वडेरा

वै कचेड़ी में लड़ै दो बंद-भाई !
थै वणाई कै वचाई—
जद जिनस वणगी लुगाई ?
थू धरम काईं रुखाळै ?
कांम जद विपरीत करतो होवै जगत रै
अर करै विपरीत कुदरत रै !
आव मन सकोच सब रै !

उपज

आ उपज !
सौ सौ गुणी वध ।

आ, धरा सूं, गिगन सूं,
नित कळ मसीना सू,
मिनख रै बूकिया री, मन-मगज री जोर लै
विग्यांन नै इण काम गाड़ी जोत
कर दै कनक मूंघी रज
आ उपज ! सौ सौ गुणी सज !

म्है गिणां संख्या अरब में
बस अरब हां पांच
पांच मुंडा जीमवा नै,
पांच तन, सुख पोखवा नै
बस अरब हा पांच

पण है हाथ म्हारा दस अड़ब
दस अड़ब पग है, पंख है,
अर ग्यांन रा घर दस अड़ब

चीज रै लारै फिरै जद चीज री कीमत
आ उपज
सौ सौ गुणी वध ।

खेम

आव म्हारी खेम
पूछण आयग्या मूसळ लियोड़ा, बारणा खड़खावता,
वैं रात आधी, गाव रा जूना मंसाणा सूं

आव म्हारी खेम
लेली म्हैं दवायां डाक्टरां री
वैद रा घासा पिया
ली गोळियां म्हैं साव राई ज्यूं हकीमां री
आव म्हारी खेम
म्हारै मन तणावां अर अपूरण वासनावां री
जगां खाली
आव म्हारी खेम
म्हे वरजिस करू नित ऊठ वेगो
सांस साधूं, योग रा आसण लगाऊं

आव म्हारी खेम
धन, घर मे घरचोड़ो मोकळो
जुद्ध म्हारो देस कोई राज सू कोनी करै
म्है नेम राखां, धरम पाळां

आव म्हारी खेम
म्है कुदरत जिवावैं ज्यूं जिऊं
म्है अेक सुर इण रागणी रो
अेक तोड़ो ताळ इण नरतन तणो हूं
रूप रो आकार इणरी धूप-छीया रो
ज्यूं निभै बस इण धरा रो नेम
आव म्हारी खेम ।

गाढ़

आव गाढ़
बैठ म्हारा हीया रा हिंडोळा में

अै वीखा ई वीखा रा जंगळ
हरख ई हरख रा सरवर
जठीनै देखूं, उठीनै—
अजांण्या असैंधा असमांन
घणो डरचोड़ो है मिनख रो आपाण
आखी ऊमर बीत जावै फळ री उडीक में
आव गाढ़ ! थारै कारण ई है पगां में करार !

घटना-दुरघटना, सगळी गई परी होणी रै हाथां
कुण जांणै कांई होवैला आगलै पल-छिण,
टूटै है बीजळी, गाजै है मेघ,
बाजै है बायरा रा गुणचास वाजणा,
अंधारा रा इण अमावस महरांण में—
थारै पांण ई दीसैला कालै रो ऊगतो भांण
चंचळ प्रांणा रो धड़को थांम
थारै पांण ई जागणो है म्हानैं—
करणो है जाप
आव गाढ़ !

ईसको

आव ईसका !
जे कीं म्हारो है जीवण में, वो गमै नहीं,
कोई खोस नी ले जावै,
म्हे करूं रखवाळी, थारै साथै ईसका

कैड़ो ई ओपरो
कैड़ो ई स्वारथी लागो म्हारो वरताव
म्हारी चिरमियां, म्हारा गड्डा-कंचा,
म्हारो बरतो, म्हारी पाटी,
घणी प्यारी है
थारै कारण ई रखाव है, म्हारा ईसका

थूं रसायण है
प्रेम, घ्रिणा, दुख अर डर रो
थारै आयां म्है सम्हाळूं म्हारी सिरड़
म्हारी रीस, म्हारी वांण कुवांण,
म्हारी चिड़
म्हारी प्रीत कोई क्यूं ले जावै
आव ईसका, म्है राखूं फगत म्हारै ताईं

भगवांन रो ई दूजो नांम ईसको
इण कारण बाइबल बतावै—
कोई दूजा देव नै मत धोको,
सगळा धरमां नै छोड़, आ जावो म्हारी अेकली सरण में
घणो प्रेय है थूं ईसका
आव ईसका।

बस्ती

आव वस्ती
अेकला तो ऊभग्या इण सूंन रा पसराव में,
आ मूंन कद तांणी सुहावै !
बात वंतळ रोज खुद सूं ई करै कितरी
अबै तो आत्महित्या करण री मन में उमावै !
ला, मिनख, लड़ता, झगड़ता, प्रीत करता,
आव वंतळ बात करता कीं पडोसी,

ईसका में जीवता, मरता, जलमता,
रीझता, नीहाळता, भर भर नयण वै,
लुक छिप्योड़ा आपरा घर डागळां सू-
बारणां सूं—
और कूची रा कियोड़ा काच-काणां सू

जी अमूझण लागग्यो है,
ला पसेवो मिनख रा तन मन बदन रो
अेक सौरम !
म्है तिसायां हां, मिनख रो दूध म्हांनै पा,
विण साथै, करा मावो, पियां मदवो,
हरख सू नाच गावां,
पीड़ होवै तो रोयलां साथै
कठा लग बीण, पोथी, छांव लै बैठां
फगत आकास रै हेठै,
लियां रोटी,
पसरता रेत रा मरु में अकेला जीव म्है ?
आव बस्ती !

न्याव

आव न्याव !
जलम्या नै होया फगत छः दिन
कोई सजा लिखग्यो म्हारी पूठ माथै
पढ़ कोनी सकूं, फगत मुगत रह्यो हूं
जुग रा जुग बीतग्या
म्हारो गुन्हो तो बताव—आव न्याव !

आखो दिन करूं मजूरी, पूजूं पसीनो
सैंठा है मन मगज अर अंग म्हारा
फेर ई घास री रोटी क्यूं ले जावै वनबिलाव !
आव न्याव !

क्यूं कोनी म्हारा कमीज रै अदीठ जेबां
कांईं कारण, कोनी बैंवा में बेनांमी खातो म्हारो
गुंडा क्यूं कोनी करै म्हारी मदद
कीकर वड़ग्या म्हारा खेल में, हर कोई रा द्राव !
आव न्याव !

अै झूठा, छिछोरा,
नट और नटणिया करैला राज ?
अै देस नै कुतर खावणिया तस्कर होवैला साहूकार ?
अै फरजी, हाका करणिया,
कद सूं वणग्या मौजीज ?
म्हैं हमेस करूंला कांम ?
अै हमेस करैला टैलीफोन ?
आ व्यवस्था तो पोची है सार्ग
आव न्याव !

आजादी

आव आजादी !
मुगत कर मिनख नै
दूजा मिनख री राजसत्ता दासता सूं !
मुगत कर धन री रगत पीवणी चतराई सू !
मुगत कर भूख सूं, गरीबी सू,
बेकारी निकरमाई सूं !
मुगत कर चमड़ी रै रंगां रा दीखता अळगाव सू !
मुगत कर धरम रा, जात रा, देस रा आग्रहां सूं
मुगत कर राग, रोग, मरण रा डर सूं
मुगत कर कुदरत री मेहरबांनी सूं
मुगत कर मसीनां सूं
थड़ियां सू, आंछी गत सूं

मुगत कर बरसां बासी धारणावां सूं
मुगत कर इण भांत—
कै म्है खुद नै सोधलां,
जीवलां खुद री जीवणी !
अर इत्ती विराट करलां चेतना नै—
कै म्हांरै मांय कर जलमै नया ब्रह्मांड;
नया धरम, नया ईस्वर !
आव आजादी !

प्राथना

प्राथना करूं देवां, प्राथना करूं !

आवो,
आप आप रै भोळायोड़ा करो काम,
मिनख नै करो सुखी,
करो इण जग्य नै सफळ !

टाबर ज्यूं लड़णो छोड़—
मिनख अर कुदरत करै पूरण अेक दूजां नै,
विग्रह अर तणाव टूटै—
मिनखां रै सिरज्योड़ा समाज रै संबंधां रा,
आत्मा होवै नचीती, प्रांणां नै मिलै फुरसत,
इण ब्रह्मांड में सिरजां देवस्रिस्टी रा जुग !
देही अर चेतना वधै
आप सगळां रै पधारयां ई !

म्है तो चढांऊं हूं पुजापो
सबधं रो, रूपां रो, रंगां रो,
सुरां रो, सौरम रो, सवादां रो,
सरधा रो, भगती रो, निरमल भावनावां रो,
हेत रो !
म्हारी अरज सीकारो,
आवो देवां ! म्हांरै जग्य में आवो ! □

'पण काई इतो सरळ है भावना सूं जुड़योड़ो, संग्यापण टूटणो ? कांई रूप, रस, गंध, गीत सूं कोनी हो सकै संग्यापण ? मत मिलो, मत बोलो, मत देखो अेक दूजा नै, तो ई अेक दूजा री खेम कामना, अेक दूजा रा गुणां अवगुणां रो अहसास, अेक दूजा रै होवण रो बोध अर जांणण रो गुमान, कांई अेक दूजा नै भावनालोक में जुड़योड़ा कोनी राख सकै ?'

पुजापो

1987

सनेसो

म्हारो सनेसो देवण नै
म्है थांरै कनै जिण किणी नै भेजूं;
म्है सोचूं–
वो खड़खड़ावैला थांरी मेड़ी रा किंवाड़,
सवालिया निजरां सूं थै उघाड़ोला बारणो,
थारी, बैठक में ले जाय, चांद तारां री जाजम माथै
पूछोला म्हारी खेम-साता,
उणरा हाथां सूं सनेसो लेवतां
परस करैला उणरा हाथां सूं थांरी आंगळियां
कीं तो सरभरा करोला थे उणरी

इण कारण खूब सिणगारूं म्हारी दूती नै,
लगाऊं अतर फुलेल,
अर हिया रो संपूरण हेत उणरै अंग अंग में राळ
उणनै भेजूं छिलोछिल थांरै कनै

उणरै पाछा वावड़ियां
करूं इतो लाड, इतो दुलार,
जित्तो कोई कोनी कियो आपरी प्रिया रो ई आज दिन
पछै भलांई वा दूनी होवै
म्हारा उसांस लियोड़ी पवन,
प्रांणां रा आब री किरण,
झबूकता हिया री आहट
कै म्हारी पूजा लियोड़ी आरती
म्हनै पूरो रो पूरो पुगावै थांरै कनै, म्हारो सनेसो।

थे हो

खीर रो प्यालो भर, रोजीना कोनी पुगावोला,
पलंग माथै बैठ म्हारै माथै हाथ कोनी फेरोला,
म्हारी सार सम्हाळ कोनी करोला,
वातां कोनी पूछोला,
कोनी मुळकोला, कोनी निरखोला,
कोनी बुलावोला म्हनैं मिंदर में,
बगीचा में, समदर रै कांठै,
कोनी हरखोला म्हारा हरख में,
कोनी छीजोला म्हारा कसाला में,
कोई वात कोनी,

थांरा हीया में म्हारो चेतो है,
थे म्हारै नैड़ा हो,
थांरो परसाद मिलै म्हनै हर जगां,
अर थांनै सिमरतो म्हे सोवूं, जागू,
अर सगळां सू वडी वात–
म्हनै ओ भांन है कै–
थे हो !
घणो इत्तो म्हारा आपांण सारू
इण वोध रा मोद में–
आ जातरा तो पूरी कर ई लेऊंला ।

बोलो

थे कांई सोचो
थे दूजा लोगा नै दरसण देवोला,
तो म्है कोनी देखूला थांनै ?
थे देवोला वरदांन कोई नै

तो कांई म्हारै खोळा रो पल्लो, रै जावैला खाली ?
थे मुळकोला कोई साम्है
काई म्हैं कोनी रीझूला थांरै मन रा उजळास माथै?
अर कांई थांरो परसाद,
कोई भगत म्हारी निजर लागां विना,
ले जा सकैला आपरै घरै ?

थे आवोला वगीचा मे–
तो कांई कोरी घास ई बिछैला थांरा चरणां हेठै ?
थे जागता बैठा होवोला रात रा पिलंग माथै
कांई म्हे कोनी होऊंला छिपियोड़ा अंधारा में ?
चांद तारां री जगमगती उजास में ?

थे जद ऊग समदर रै कांठै
निजरां पसारोला
जळ थळ गिगन रा मिलण-खितिज तांई
कांई म्है कोनी होऊंला
उडता पांखी ज्यू ढळता सूरज रै सांम्है ?

थे कांई सोचो !

मिलण

छांनै मिलण रो कोनी उमावो म्हांनै !
लोग देखैं, ईसको करैं,
म्हनै होवैं गुमेज,
म्है करूं थांरा बखांण, थे लाजो,
रूबरू अर पीठ पिछाड़ी
कोड तो साव चवड़ै होवैं जद ई
जीवण घट भरै रस रा रसायण सूं

थांरा गीत गावतो फिरूं मैफल मैफल,
आंसू रा घारोळा उतरै म्हारै गालां माथै
हिचकियां आवै म्हनैं वेळा कुवेळा
थांनै चितारतां, पांतर जाऊं म्है
इण संसार मे म्हारै जीवण रो अरथ !
तो लोग जांणै ई म्हारी प्रीत,
अर प्रीत रा प्रभू—थांनै
छांनै मिलण रो कोनी उमावो म्हांनैं

वार तिवार तो मिल जाया करो मोबीड़ा
उण दिन तो सगळा ई मिलै अेक दूजा सू–
राखी नै भाई बैन,
सराध में जीवता मरियोड़ा,
होळी नै रंगां रै मिस,
दिवाळी नै रामां सामां करण नै,
मेळा में, जीमण में, खेल में, ख्याल में,
सभा में भासण में,
हाट बजार में, तीरथ में,
चवड़ै धाड़ै कठै ई मिलो भलां ई–
छानै मिलण रो कोनी उमावो म्हांनै ।

कांमण

दड़ी नै ऊंची फेंकणी अर पाछी झेपणी,
ओ कांमण रो छिण होया करै

बूढ़ा मास्टर रो मिलणो अर बोलणो–
'हाय कित्तो मोटो होयग्यो थूं ?
कैड़ो म्हारा खोळा में दुबक जावतो
जद गाजता मेघ अर पळकती बिजळी
थूं तो जवांन होयग्यो रे !'

अर म्हारा टाबरां नै बतावणो म्हारो–
'अै म्हारा गुरुजी है !
बाळापण नै उछाळ, पाछो झेपण रो
अैडो ई अेक कामणगारो छिण होवै !

फेर फेर सोधू ओ ई कांमण रो अलौकिक छिण,
जलम, जीवण अर जवांनी रो–
जद म्है बताऊं लोगां नै,
आ म्हारी मांनेतण ही,
म्है रह्या करतो इण कनै,
घर सू धक्का देय काढचां पैला !
जीम्या करतो इणरै हाथां सूं
कचकोळिया रै खणकारै !
आ करती म्हारा लाड, म्हारा कोड,
म्है सिणगार हा अेक दूजा रा सेजां में
म्है सराई पोसाकां अेक दूजा री
उडीक्या अेक दूजा नै,
अर घुळग्या अेक दूजा में–
छाछ अर माखण ज्यूं,
मिसरी ज्यू मुडा में

कुण जांणै
किसी गाज रै गरजण
कीकर छिटक पड़्या आगा अेक दूजा सू
नदी रा दो पाटां ज्यूं,
कै तरसग्या दरसण नै !
बांसरी अर मोर पांख रैयगी फगत
म्हारै कनै, पूजा करण नै
अर म्हारै सुखी जीवण री कांमना -
उणरा हीया मे !

कांई बताऊं !
कोई देस में, कोई काळ में, कोई रूप में,
म्है अेक ई हा दोनूं !

हठ

अठा सूं कठै ?
आ परकमा तो पूरी होयगी लागै
मरणांत माथै आयग्यो है मारग
जद थे कोनी देवो आऊकार–
तो कठै चढ़ाऊं फूलां री अंजळी !
हेठै धरदू बासरी ?
भूल जाऊं गायोड़ा गीत ?
फैंकू आरती री थाळी समद रै मंझधार ?

कै लिखू नया गीत
पूजा सजाऊं पाछी
पाछी करूं जातरा जलम सू सरू
जठा सू पैली करी ही ?

थांनै अर थारा मिजाज नै बदळण री
तो संभावना कोनी
अर ना बदळैला म्हारो ठरको
वै रा वै सभाव है दोना रा !

फगत साधन बदळ सकू
रीझ री जगां रीस,
गीत री जगां गाळियां,
फूलां री जगां भाटा !

थांनै सागो करणो पड़ैला म्हारो
पूरी करणी पड़ैला परकमा म्हारै साथै !
म्है जिकी साधली है साधना,
अकारथ कोनी होवण दू ला -
थांरा ओपरा बौवार सूं !
जीलूंला म्है अठा रो अठै
अठा सूं कठै ?

लोरी

सोजा, नचीती हो सुयजा !
म्है जगाय दूंला थनै दिन ऊगां
केसा में आंगळियां उळझाय,
हरजस गाय,
गिलगिली कर पगथळी रै
गाल माथै चूमो देय !
अबै सोजा !

रात घणी चढगी
थूं आंख में कस ई कोनी घालैला
तो वगत माथै ऊठैला कीकर
अर आखो दिन आंख में जागण भर
कांम कीकर करैला ?
थाकगी होवैला म्हारी व्हाल !
अबै सोजा !

बाट जोवै सिरांणै ऊभा सपना
मन री अणमणी वासना वाट जोवै वारै निकळण री !
बिछावणा नै ई हर आवै, थारै निवास री,
तकिया नै माथा रा केसां रै सौरम री,
अर रजाई नै थारै अंग रै च्यारूंमेर लिपटण री !
मत तडपा कोई नै
वती वडी कर अर सोजा ।

माध्यम

म्हारा गीत पावड़िया कोनी थारै मिंदर रा
जिका चढ़, म्है आऊं थारै अंतरपटां लारै !
म्हारा गीत कोनी रेसम री डोर

जिकी नै पकड़,
स्यारो लेय चढ़ जाऊं
थांरै हियै रा डोगोडा डूगर
म्हारा गीत कोनी तीरथ....जळ
जिकां में न्हाय,
म्हैं निरमळ होय जाऊं तन मन सू

जे चुगणो पड़ै म्हनै
दोनां मांय सू अेक,
तो निस्चै जांण, म्हारी जांन
कोनी चुणूं थांनै, गीतां रै वदळै
सवाल तो थांनै दोनां नै साथै राखण रो है
गीत कोनी है मारफत
सवद म्हारी संपूरण चेतना है,
अर गीत है उण चेतना रो राग, अनुराग, सिणगार
गीत म्है खुद हूं
अर थै हो सेवट पराया
इण सारू गीतां साटै कोनी मोलू थांनै
म्हारा गीत रमेकड़ा कोनी थांनै रमण रा
म्हारा गीत फूल कोनी थारै चढ़ावण रा
म्हारा गीत पावड़िया कोनी ।

हरख

आज थांरो रोम रोम पुळकै
कोई हेताळू आयो दीसै मिलण नै
जिकां री उडीक में अणमणा हा थे

आज हरख सूं लैरावै थांरो मन
कोई प्रेमी लायो दीसै प्रेम रो पुजापो
जिकां री पूजा री उडीक में बेचैन हा थे

आज थारा प्राण झूमै है गहळ में
कोई मेळू रातवासो करण नै रुकग्यो लागै
थांरी मेड़ी मे !
जिका नै वधावण नै
थे सिणगार सजायो च्यारू भीता रै

आज थे पुसव ज्यू विना कारण हस पड़्या
दिन ऊगां, दिन ऊगां !
रात रा कोई अणत कथा कैयग्या लागै,
चांद तारा थारा कांनां में

आज थे देही में कोनी लागो
किसी किरणा री चांदी डोर फेंक—
थांनै बुला लिया दीसै चंवरी में कोई,
जिका रा अमर सवाग री टेक लियां
वैठा हा थै माथा मे अटाळ घालिया

आज थे अणमीत फूटरा लागो ।

परस

थांरा तो हिया सूं
अेक गुलावी किरण रो वारै निकळणो
अर म्हारै प्रांणां रा पोयण रो खिलणो
कैड़ा होया जै स्री क्रिस्णा

सौरम रो अेक आखो वादळो
पसरग्यो सरवर माथै,
गैली पवन रमण लागगी म्हारा गावां सू
उडीकै हा भंवरा
उड़ उड़ झाकण लागग्या म्हारा हिया में
मंडरावण लागग्या म्हारा घर रै ओळूं दोळूं

अर गूंज गूंज मचायो इत्तो कळरव, म्हारा प्रांणां में
कै विसरग्यो म्हनै म्हारै विगसण रो उमावो
अर म्हारै ध्यांन री अेकाग्रता टूट
म्हनैं दाझणो पड़चो थांरी अलेखां
आकरी किरणां में

थांरै दियोडा रूप नै
देख ई कोनी सकी
नीचै मुंडो झुकाय दरपण में
नाच ई कोनी पाई इण लाभ रा मोद में
गा कोनी सकी थांरै म्हारै सगपण रा सींठणा
इण पैली ऊगग्यो सिंझा रा गिगन रो तारो
अर म्हनै बंद करणो पड़चो
म्हारै रूप बिगसाव रो आकार
म्हारै प्रांण-पराग री मजूस
थांरो परस, अपरस ई रह्यो म्हारा जीवण में ।

बस्ती

इण बस्ती में अबै कांई रैवणो
आखो दिन थे रैवो बारै
अर आखी रात थांरा बारणा रैवै बंद
इण गळी सूं तो ऊठगी थांरी सौरम
अबै इण बस्ती में कांई रैवणो

फगत रैयगी है थांरी निरमळ गति अर आवेग,
झरणा नदियां मे,
जिकी कोनी मावै म्हारै सामरथ री झोळी में
फगत रैयगी है थांरै प्रांणां री पुलक,
दिखणी पूंन में,
जिकी कोनी बंधै म्हारी भुजावां में

फगत रैंयगी है थांरी देहाभ,
अकास रै रोसणी आंचळ मे,
जिकी म्है परस कोनी सकू
वस सुणीजै थांरी हंसी फूलां में
जिकी कोनी मावै म्हारी थाळी में
थै कोयल रा कंठा में गावो
पण कोनी समझू म्है
सुर या सबद थांरी भासा रा
जुड़ाव तो कटग्यो हो आंवळ नाळ कटतां ई
थारै कनै रैंवण रो उछाव ई रीतग्यो अवै तो
अवै कांई रैंवणो इण बस्ती में।

कुण

अेक दिन भेळी होई पंचायत
अर म्हारै कनै मांगियो खुलासो
म्हारै सवंधा रो, थारै साथै

साचांणी आपा कांई लागां अेक दूजा रै ?
काई लागै हाथ पग, पेट, आंख,
मगज, हीयो, रगत, म्हारै ?
काई लागै चेतना म्हारै ?
कांई लागूं चेतना रै म्है ?

अै हरख, सोग,
राग, प्रेम, क्रोध, कांम,
सगळा मनोविकार कांई लागै कोई रै ?

काई लागै कुदरत मिनख रै ?
हरिया रूंख, वैवतो जळ,
हथिणी गत हालती पूंन,

धरती, अकास, अगन ?
कोई अणत, कोई छिण भर ?
कोई विराट, कोई चिरमी गट्टो

समाज मे ई कुण लागै किण रै ?
जात, धरम, परिवार,
सगळां री रचना होई आपां रा अनाड़ी हाथां सूं ?
अै कद साधै कोई नै, अै कद ढावै कोई नै ?

इण विराट सुदरता नै
म्है कोनी चितारिया पति ज्यू
अेकला म्हारा कोनी वणाया
भाई, भायला, ज्यू, अणजांण ज्यू,
मालक ज्यू, ठाकर ज्यूं,
राजावां रा राजा ज्यूं
म्हैं समायोड़ो हूं इण अणत में
ज्यूं ओ विसांई खावै म्हारै मांय !
म्हारो आकरसण-विकरसण,
निपजै आपरा खुद रा नेमां सू !
म्हैं अेक दूजा नै सोधां, लाधां अर समझां,
आप आप रा संस्कारा सूं !

सुदरता में, करुणा मे, प्रेम में
उणनै थेपड़ू म्है !
तो निस्छळ, निस्कपट अंतर में,
रातवासो करै वै ई
घुळियोड़ा अेक दूजा में ?
कांई वखाण करूं म्है म्हारै संवंधां रा,
पंचां नै कांईं बताऊं ?

भूलणो

ज्यूं भूलग्या थे
स्रिस्टि री रचना कर, उणरो कारण,

अर मतै मतै वधण दिया सगळां नै
परायां नै वस में कर, दूजां नै मार दूजां रो नास कर
थें तो भूलग्या होवोला
अेक दिन दरसण देय,
थें म्हारै नैणा मे जगाई अेक उडीक,
म्हनें वतळाय,
थें म्हारै मन में जगाई अेक तिरस,
म्हनें परस कर,
म्हारी देही नै जगाय दी थें
अेक सवेदन भरी वीणा री झणकार में!
क्यू कै थांरी आ वांण है
सगळा प्रेम प्राथनावां में जमियोड़ा
हेताळुवा साथै रोजीना, इकसार !

पण म्हनें याद है हाल
वै बीजळ दरसण रा झमका,
वै परस रा राग रंग रचिया छिण,
जद म्है, विना आगली पाछली रो विचार कियां
धारली मन मे
कै थांनै म्हारै वारै कोनी रैवण दूंला
अर म्हारी पूजा सूं
थांरी मानता नै कर दूला इत्ती अलौकिक
के थारा गीत गायां ई जाऊंला
जलम जलम !
जठा लग कोनी होवै अेकाकार
आपां रा आपा,
अर मिट जावै आपांरा न्यारा न्यारा आपाण !
थें तो भूलग्या होस्यो !

पुजापो

पुजापो संधाण है आणंद अरण रो;
जठै म्हारो वण सकै आसरम,

चीड अर देवदार रा रूंखां बीच,
हरिया हरिया आसापाला री
निरमल ऊंची उठांण में !
जठै किस्तूरी मिरगलां साथै
भटक सकै म्हारो मन !
जठै घिर घिर आवै करुणा रा मेघ !
खिलै फूल होठा में,
जठै उणनै कोई तोड़-मसोसै कोनी !
जिकां में रळकता हेत नीझरां मे
म्हैं बुझाऊं तिरस
अर उमड़ता अंधारा में
हरी हरी गीली घास माथै लुट सकूं !

थारो म्हनैं देखणो भरपूर निजरां,
मुळकणो
चन्नण देही री रूंवाळी रो सिहरणो,
म्हनै देयग्यो गंध रो गिगनार !
थांरी बोल-बतळावण, गीत- संगीत, परस,
म्हनैं करग्यो सबद बिहूणो,
बीजळ सैचांनण !
थांरी मनवारां, हेत-सत्कार, पूछ परख सूं
म्है लैरीजतो रह्यो सरप ज्यूं;
अर गरब करतो रह्यो थांरी ओळखांण रो,
मिजाज पुरसी रो !
अछेही आणंद रो मारग हो ओ
इण निरजण अरण में !

आणंद सरोवर रा ओटा माथै
म्है खावण बैठग्यो विसांई
तो इण थिर जळ रा लाल पोयणां ज्यूं
थांरी पीड़ सूं हुई म्हारी चौनिजरी !
थनै सुखी करण रा कळाप
म्हनै बटाऊ ज्यूं आगै वधण रो दियो कारण

म्हैं घणा सपना भाळिया;
अर सतदळां रै हेठै अंतरलोक में पूगण रो,
पीळा पराग नै खंखेरण रो उमावो,
म्हनें देयग्यो आणंद पुरवाई रो परस !

घणो मोद होवै लोगां मे ईसको जगावण में,
गहळ रा आणंद है लोगां रा बोल सुणण में
कोई आंगळी दिखावै–
तो लागै जाणै तारो टूटियो है अकास में
अर रेख खिंचगी है कनक ओप री

मुंडो मरोड़, अबोलणा, मांन,
म्हारा हीया नै पुगाय दियो आणंद री माठ तांई
थांरो रूखापणो म्हनै देयग्यो–
माखण जेड़ा सबद, कविता री कुरळाट मे
अणत आणंद भोग्यो है म्है थारी उडीक रो
ओ हेत, हेत री तड़प,
पूजा, आराधण, कल्पना, कांमना,
अर म्हारो सिखर समरपण
म्हारी प्रणति नै पुगाय दी है
उण मोहनी, सरव व्यापी, देवी सत्ता तांई
जठै आणंदमय है बारली अर मांयली
जीवण ऊरजा
म्है आणंद समाध में हूं
इण आणंद अरण में ।

□